

कृपया यह ग्रन्थ नीचे निर्देशित तिथि के पूर्व अथवा उक्त तिथि तक वापस कर दें। विलम्ब से लौटाने पर प्रतिदिन दस पैसे विलम्ब शुल्क देना होगा।

पहला अंक

पहला दृश्य

[स्थान—नलहारणोगढ़ की एक बावड़ी के निकट की पगडंडी। ग्राम की कुछ युवतियाँ बगल में रीते घड़े दबाये आ रही हैं। कुछ सिर पर भरे हुए घड़े रक्खे जा रही हैं। युवतियों की पोशाक राजस्थानी है। रङ्गीन घाघरा, रङ्गीन चूनरी। हाथ, पैर, गले, कान और सिर के आभूषण उनकी आर्थिक स्थिति का भेद बता रहे हैं।
चपला का युवतियों के साथ गाते हुए प्रवेश।
सभी युवतियाँ घड़े लिये हुए हैं।]

(गाना)

सखि, घट में भर पानी।
दिन जाता है बीता,
रह न जाय घट रीता,
कौन समय से जीता,
वह करता मनमानी,
सखि, घट में भर पानी।
देख उधर क्या आई,
नभ में बदली छाई,
लहर लहर लहराई,
तेरी साड़ी धानी,
सखि, घट में भर पानी।

रुन-झुन-रुन-झुन हौले,
पग के बिछुआ बोले।
सखि, चल घूँघट खोले।
प्यास बुझा लें प्राणी,
सखि, घट में भर पानी!

चपला—क्यों हवा हुई जाती हो? थोड़ा रुको भी।

(सभी युवतियाँ अपने घड़े रख कर बैठती हैं)

एक युवती—क्यों चपला, राजस्थानियों के प्रति भगवान् का करुणा-हस्त इतना कृपण क्यों हो गया है? यहाँ के आकाश में या तो मेघ-माला के दर्शन ही नहीं होते, या होते भी हैं तो वे प्राणों में प्यास जाग्रत कर के अन्तर्हित हो जाते हैं। भूले-भटके द्रवित भी हुए तो जलते हुए बालू-कणों को दो-चार बूँदें पिला कर चलते बने।

चपला—राजपूतों की तलवार में पानी है। यहाँ तो पानी नहीं, खून की वर्षा होती है।

दूसरी युवती—यहाँ की भूमि अगस्त्य मुनि की प्यास ले कर आई है। चाहे कितनी वर्षा हो जाय, घड़ी भर पीछे वही शुष्कता!

चपला—हाँ बहन, इस भूमि को केवल पानी की ही नहीं, रक्त की भी ऐसी ही भयानक प्यास है। आये दिन यहाँ रक्त की वर्षा होती है, फिर भी इसकी जीभ लपलपाती रहती है।

(नेपथ्य में घोड़ों की टापें सुनाई देती हैं)

पहली युवती—उधर देखो, कितनी धूल उड़ रही है चपला!

चपला—शायद महाराव हम्मीरसिंह जी आये हों।

दूसरी युवती—शिकार खेलने?

पहली युवती—क्या यहाँ जंगली जानवर अधिक रहते हैं ?

चपला—सिंह को जंगली ही कहा जाता है। वह सभ्यता किस काम की, जो मनुष्य को पालतू कुत्ता बना देती है। हम राजपूत जंगली रहे हैं और जंगली ही रहेंगे। हम मरना या मारना, दो ही रास्ते जानते हैं। बीच का रास्ता नहीं। चलो, अब चलें, देर होती है।

(सब का वही गीत गाते हुए एक ओर से प्रस्थान, दूसरी ओर से अलाउद्दीन और मीर महिमा का प्रवेश)

अलाउद्दीन—देखते हो महिमाशाह, उस बावड़ी पर……

मीर महिमा—जी जहाँपनाह ! आँखें हैं, इसलिए देख पाता हूँ। और इन पाकदामन बहनों के कदमों पर मन ही मन सर झुकाता हुए। मुझे तो इन राजपूतों की ज़िन्दगी बेहद प्यारी है। खुदा ने यहाँ या तो बालू के मैदान बिछाये हैं, या चट्टानी पहाड़ियाँ खड़ी की हैं। इस वीराने में राजपूत औरतें ही तो फूलों की तरह रौनक बढ़ाती हैं। देख कर आँखें ठंढी हो जाती हैं।

अलाउद्दीन—और दिल जल उठता है। उस धानी साड़ी वाली लड़की को देखते हो महिमा ! इतनी बेगमों के होते हुए मेरा महल मुझे वीरान जान पड़ता है। बोलो, तुम मेरा काम करोगे ? उस लड़की से……

मीर महिमा—मीर महिमा ऐसी बात सुनना पाप समझता है जहाँपनाह ! दिल्ली के बादशाह ने चित्तौड़ के महाराणा या रणथंभोर के महाराव का सर माँगा होता तो मैं अपना हौसला आज़माता। एक बहादुर सिपाही किसी औरत की इज्ज़त और शान के खिलाफ कोई बात नहीं सुन सकता।

अलाउद्दीन—महिमा, तुम मेरे नौकर हो। तुमने मेरा नमक खाया है।

मीर महिमा—आपकी खिदमत में बन्दे का सर हाज़िर है (अपनी तलवार बढ़ाता है) यह लीजिए मेरी तलवार। उस दिन जब मैंने पैदल ही शेर का शिकार किया था, तब यह हुजूर ने इना दी थी। इससे मेरा सर उतार दीजिए।

अलाउद्दीन—तो मैं दूसरे आदमी को भेजूँ?

मीर महिमा—माफ़ कीजिए, दिल्ली के बादशाह अलाउद्दीन खिलजी साहब यहाँ से तब तक एक कदम भी नहीं हिल सकते जब तब ये बहनें किले में दाखिल नहीं हो जातीं।

अलाउद्दीन—मैं खुद जाऊँ तो...

मीर महिमा—तो जहाँपनाह के पैरों को थोड़ा-थोड़ा छोटा देना पड़ेगा।

अलाउद्दीन—अहसान को न मानने वाले महिमा! तुम बेइज़्ज़ती करते हो! जिस हाँडी में खाना उसी में छेद करना अलाउद्दीन के गुस्से का नतीजा देवगिरि के खँडहर बता रहे हैं।

मीर महिमा—मैं जानता हूँ इस गुस्ताखी का नतीजा है मौत! लेकिन जहाँपनाह, इस गुलाम ने ज़िन्दगी की परवा ही किस दिन की है? आप चाहें तो मेरा सर इसी वक्त ले सकते हैं। उसी वक्त तक ज़िंदा रहने की कोशिश करूँगा, जब तक ये राज बहनें किले में दाखिल नहीं हो जातीं।

अलाउद्दीन—मैं तुम्हें मारूँगा नहीं। तुम्हारी ज़िन्दगी खँ बना दूँगा। महिमाशाह, मैं तुम्हें हुक्म देता हूँ कि तुम मेरी हुजू

की हद के बाहर चले जाओ।

मीर महिमा—मुझपर इतना रहम क्यों ? मैंने तो आज तक यही देखा है कि जिसपर बादशाह अलाउद्दीन की त्योरी चढ़ी वह या तो जल्लाद की तलवार के नीचे आया या शेर के जबड़ों के बीच। आज आपके दिल में रहम का दरिया क्यों उमड़ पड़ा ?

अलाउद्दीन—मैं देखना चाहता हूँ कि दिल्ली के बादशाह की तोहीन करनेवाले को अपनी छाया में जगह देने की हिम्मत किसमें है।

मीर महिमा—मेरी तलवार मेरे लिए जगह बना लेगी। आखिरी बार अपने मालिक के पैरों में अपना सर रख दूँ ?

(अलाउद्दीन के पैरों पर झुकता है)

अलाउद्दीन—महिमा, ढोंग न करो। मैं तुम्हें अब भी मौका दे सकता हूँ। तुम गलती……

मीर महिमा—मैं मौका नहीं चाहता। बहनें किले में दाखिल हो चुकी हैं। मेरा काम हो चुका। हरेक मर्द का फर्ज है कि वह औरत को बचावे। औरत, चाहे वह किसी कौम की हो, उसकी इज़्ज़त करनी चाहिए। आप यही सीख सकें तो दुनिया में अपना नाम रोशन कर जावें। आप में क्या नहीं हैं ? और तो और, वह ताकत है जिसके आगे हिन्दुस्तान का हरेक राजा काँपता है। आपकी आँख की त्योरी से ऊँचे-ऊँचे किले झुक जाते हैं। जहाँपनाह, आप इंसान बनें। मैं जाता हूँ। मेरे भाई का खयाल रखिएगा। (प्रस्थान।)

अलाउद्दीन—बहादुर मीर महिमा ! तुम्हें ज़िन्दा छोड़ कर मैंने तुमपर दया नहीं की। राजपूती घमंड में कोई न कोई राजा तुम्हें जगह देगा और मुझे उसका मुल्क अपनी हुकूमत में शामिल करने

का मौका मिलेगा। एक तीर में दो निशाने मारे हैं। दिल्ली के अमीरों में महिमा को इज़्ज़त और रोब बहुत बढ़ गया था। न जाने किस दिन ये मिल कर मेरे ही खिलाफ़ उठ खड़े होते। चलो, एक काँटा तो साफ़ हुआ। (प्रस्थान।)

[पट-परिवर्तन]

दूसरा दृश्य

[स्थान—जंगल। समय—रात्रि। चाँदनी रात है। सब ओर निस्तब्धता है, केवल कहीं पास ही में बहने वाली सरिता का कल कल शब्द सुनाई दे जाता है। महाराव हम्मीरसिंह और रणधीर-सिंह का हाथ में नंगी तलवार लिये प्रवेश।]

हम्मीर—चाचाजी, मेरे प्राणों में असंतोष का, अशांति का और उद्दाम आकांक्षा का भयंकर बवंडर उठता रहता है। वे भी दिन थे जब हमारे पूर्वज पृथ्वीराज चौहान की विजय-दुंदुभि से दिशाएँ गूँजती थीं। विदेशी आक्रमणकारियों के जन-समुद्र की लहरें पृथ्वीराज रूपी चट्टान से टकरा कर लौट जाती थीं। उस वीरता-पूर्ण गौरवमय अतीत की याद से हृदय पुलकित हो उठता है। मेरा जी करता है, पूर्वजों के रक्त से सिंची हुई हमारी जन्मभूमि पर अधिकार कर चैन की वंशी बजाने वालों से लोहा लूँ? मेरे प्राणों में जोश का तूफान लहराता है, वही मुझे इन जंगली घाटियों में लिये फिरता है। क्या सिंह के शिकार से मेरी तलवार तृप्त हो सकेगी?

रणधीर—मैं जानता हूँ हम्मीर! तुम एक दिन दिशाओं को लाल करोगे।

हम्मीर—मेरी तलवार प्यासी है चाचाजी! उसे नर-रक्त

चाहिये ! नर-रक्त ! यह फाल्गुन का महीना है। थोड़े दिनों में होली आने वाली है। मेरा जी चाहता है, इस बार जी भर-कर रक्त की होली खेली जाय।

रणधीर—किससे और कैसे ? यह तो माना कि एक दिन चौहानों के चरणों में भारत के सभी भूपाल अपने शीश झुकाते थे। किन्तु अब हम एक मामूली प्रदेश के स्वामी हैं। अकेला चना भाड़ नहीं फोड़ सकता।

हम्मीर—लेकिन मेरा तो हृदय फटा पड़ता है। मेरे पैर ज़मीन पर नहीं पड़ते। प्राणों में ज्वालामुखी जल रहा है। छोटे से प्रदेश का स्वामी—हम्मीर—विनाश की भैरव-मूर्ति बन कर अपनी हुंकार से भारत का कोना कोना कँपा देगा। एक बार फिर चौहानी तलवार के तेज से संसार की आँखों में चकाचौंध पैदा होगी।

(जंगल में बड़े ज़ोर की दहाड़ सुनाई देती है)

रणधीर—लो, कोई शेर आता है। शत्रुओं से लोहा लेने के पहले इसी से दो-दो हाथ करो। चलो, उसे खोजें।

हम्मीर—जाने भी दो चाचाजी ! वह नर-मांस का लोभी अपनी बलि देने स्वयं यहाँ आ जावेगा। क्या उसे कहीं खोजने जाना होगा ? जिस तरह पतंगे दीप-शिखा पर टूट कर जान देते हैं, उसी तरह हिंसक पशु हम्मीर की तलवार पर टूटेंगे।

(फिर शेर की दहाड़ सुनाई देती है)

रणधीर—जान पड़ता है, यहाँ कोई और भी शिकारी है। शेर घायल हो कर चीख रहा है।

हम्मीर—कौन दो सिर वाला मेरे शिकार पर हाथ साफ करने

आया है। जिसने शेर का शिकार किया होगा उसका मैं शिकार करूँगा।

रणधीर—नहीं हम्मीर, किसी बहादुर से व्यर्थ ही रार नहीं बढ़ाते।

(मीर महिमा का रक्त से रँगी तलवार हाथ में पकड़े और कंधे पर शेर की लाश लादे हुए प्रवेश)

हम्मीर—बहादुर, शेर को रख दो। तलवार सम्हालो।

मीर महिमा—किस लिए ?

हम्मीर—चौहानी तलवार जंग उतारना चाहती है।

मीर महिमा—आप कौन हैं ?

रणधीर—ये हैं रणथंभौर के महाराव हम्मीरसिंह चौहान और मैं इनका चाचा रणधीरसिंह।

मीर महिमा—आप दोनों का नाम तो दिल्ली के बादशाह अलाउद्दीन खिलजी को भी खटकता है। जिसने दिल्ली से ले कर देवगिरि तक फतह का डंका बजाया है वह भी···

हम्मीर—हमसे लड़ना चाहता है। वह सुदिन न जाने कब आयगा। पहले तुमसे दो-दो हाथ करूँगा। तुमने मेरे शिकार को मारा है, मैं तुम्हें मारूँगा।

मीर महिमा—अगर आपकी यही मर्ज़ी है तो थोड़ा ठहर जाइए। थोड़ी लकड़ियाँ जमा करके इस शेर का गोश्त पका कर खा लूँ। तीन दिन से कुछ खाया नहीं है। पेट भरने के बाद ज़रा आराम से मर सकूँगा।

हम्मीर—तुम कौन हो बहादुर, और क्यों तीन दिन से तुमने कुछ नहीं खाया ?

मीर महिमा—मुझे मीर महिमा कहते हैं। बादशाह अलाउद्दीन

की फौज का एक सिपहसालार मैं भी था।

रणधीर—अब नहीं हो ?

मीर महिमा—इसीलिए तो पेट से भूख का रिश्ता जुड़ गया है। बादशाह ने नाराज़ हो कर मुझे निकाल दिया है और मुनादी पीट दी है कि जो कोई मुझे पनाह देगा उसके जान-माल की खैर नहीं है।

हम्मीर—तो तुम रणथंभौर चलो।

मीर महिमा—मैं मुसलमान हूँ।

हम्मीर—इंसान तो हो न! इंसान होने से काम चल जायगा। आज से तुम मेरे भाई हुए।

मीर महिमा—मेरी खातिर आफत······

हम्मीर—आफत! हः हः! क्या बच्चों जैसी बात करते हो! जो अग्निपुत्र हैं, जिनकी माताएँ पत्नियाँ और बहनें हँसते-हँसते आग में जीवनाहुति चढ़ा देती हैं, वे क्या आफतों से डरते हैं! जंगली जानवरों का शिकार करते-करते मैं ऊब गया हूँ। किसी ज़बर-दस्त शक्ति से लोहा लेने को दिल बेचैन है। डरो मत मीर! मेरे दिल में जगह है और रणथंभौर के किले में भी। दिल्ली के जैसे भव्य भवन वहाँ न मिलेंगे लेकिन एक भाई का प्यार तो मिलेगा ही।

मीर महिमा—शुक्रिया। मैं अपने कारण क़िसी को मुसीबत में नहीं डालना चाहता। एक जान की खातिर हज़ारों जानें बरबाद नहीं करना चाहता।

हम्मीर—जो जानें बरबाद होने के लिए बनी हैं, उन्हें विनाश से कौन बचा सकता है? क्षत्रिय का एक पैर सेज पर और दूसरा चिता पर होता है। आप क्षत्रियों को नहीं जानते।

मीर महिमा—जानता क्यों नहीं महाराव! लड़ाई के मैदानों में मैंने उन्हें देखा है। उनकी बहादुरी की इज़्ज़त की है। सच पूछो तो हम पठान भी आप लोगों के भाई हैं। इस्लाम कबूल करने के पहले सारा अफ़गानिस्तान आर्यों का मज़हब मानने वाला था।

हम्मीर—मियाँ, छोड़ो भी इतिहास को। सदियों पहले तुम्हारे बुजुर्ग क्षत्रिय थे; क्या इसीलिए मैं तुम्हें ज़्यादा चाहने लगूँगा? मेरे लिए तो इतना ही पर्याप्त है कि तुम वीर पुरुष हो, संकट में हो और तुम्हें शरण देने में विपत्ति है। तुम्हें गले लगाना फूलों का हार पहनना नहीं, काँटों पर सेज बिछाना है। हम लोग तो विपत्तियाँ खोजते फिरते हैं। देखता हूँ कौन रणथंभौर की चट्टानों से अपना सिर टकराने आता है। लाओ लपना यह शेर। तुम भूखे हो, फिर बोझ ढोते हो।

(मीर महिमा से शेर को छुड़ा कर अपने कंधे पर लादना चाहते हैं)

मीर महिमा—रहने दो महाराव! यह भूखा पठान ऐसे दो शेरों को अभी और लाद सकता है।

(शेर के लिए दोनों खींचा-तानी करते हुए चले जाते हैं। पीछे-पीछे रणधीर भी जाते हैं।)

[पट-परिवर्तन]

तीसरा दृश्य

[स्थान—दिल्ली में मीर गभरू के मकान का एक कमरा। कमरे में खूँटियां पर तलवारें, तीर, कमान, ढाल आदि अस्त्र-शस्त्र टँगे हैं। मीर गभरू मसनद के सहारे लेटा हुआ विचार-मग्न है। एक बाँदी पान से भरी हुई तश्तरी रख कर चली जाती है। मीर गभरू तश्तरी में से एक पान उठाता है और मुँह तक लाता है, फिर बिना

खाये ही वापिस तश्तरी में पटक देता है। झुँझला कर खड़ा होता है और पान की तश्तरी को लात मारता है।]

मीर गभरू—कुछ नहीं, कुछ भी अच्छा नहीं लगता। यह रईसी किस काम की ! आज रईस, कल भिखारी ! मैं यहाँ ऐश कर रहा हूँ, और मेरा भाई मारा-मारा घूमता होगा। एक मसनद पर टिक कर बैठा है, दूसरा ज़मीन पर खड़ा होगा।

(जमालखाँ का प्रवेश)

जमालखाँ—(मीर गभरू के कंधे पर हाथ रख कर) कहिए मीर साहब, किस सोच में पड़ गये हैं ?

मीर गभरू—कुछ नहीं खाँ साहब ! मेरा एक बाज़ू कट गया है। मेरी आँखों की रोशनी चली गई है। मेरे दिल का चिराग बुझ गया है। जब से महिमा गया है तब से किसी काम में मेरा मन नहीं लगता।

जमालखाँ—लेकिन भाई, यह तो बादशाह का ज़ुल्म है। आज धोखेबाजी से अपने चाचा को मौत के घाट उतार कर दिल्ली की बादशाहत पर कब्ज़ा कर लेने वाला अलाउद्दीन हम लोगों की जड़ खोदना चाहता है। मैं तो कहता हूँ मीर साहब, मीर महिमा ने गलती की जो दिल्ली को छोड़ कर चले गये। आपके और उनके इशारे की देर है, अलाउद्दीन की हस्ती को हम मिट्टी में मिला दे सकते हैं।

मीर गभरू—बहादुर आदमी गुस्सा नहीं करता। अलाउद्दीन हमारी कौम की शान है। उसकी हस्ती को मिटा कर हम अपनी ही हस्ती को मिटा छोड़ेंगे। मीर महिमा मुझे जान से ज़्यादा प्यारा है, लेकिन उससे ज़्यादा प्यारी है मुझे मेरी कौम। अलाउद्दीन ने मेरे दिल पर जो घाव किया है, वह मैं जिन्दगी भर नहीं भूल सकता,

फिर भी वक्त पड़ने पर मैं उसके लिए जान देने में नहीं हिचकूँगा।

जमाल—लेकिन आप अलाउद्दीन की चालों को नहीं जानते। न वह हिन्दुओं का है, न मुसलमानों का। उसने हम लोगों की मदद से अफ़गानिस्तान से देवगिरि तक अपना राज्य फैला लिया है और अब वह अपने आप को कायम रखने के लिए सभी सरदारों, रईसों और अमीरों को मिटा डालना चाहता है। आज महिमाशाह गये, कल मीर गभरू जायँगे, परसों जमाल खाँ! वह इस हक़ में नहीं है कि हम रईस आपस में मिल कर ताकतवर बनें।

गभरू—यह तुम कैसे जानते हो?

जमाल—यह तो सूरज की रोशनी की तरह ज़ाहिर है। मैंने अपने लड़की की शादी महरमखाँ के लड़के से करनी चाही। बादशाह ने इजाज़त नहीं दी। वह दो अमीर घरानों में रिश्ता नहीं होने देता। वह डरता है कि हम लोगों में इतनी ताकत न आ जाय कि हम उसपर दबाव डाल सकें। वह हमें अपना हथियार बना कर रखना चाहता हैं, हममें हथियार पकड़ने की ताकत नहीं पैदा होने देना चाहता।

गभरू—वह होशियार है। जो पिछली बातों से फ़ायदा नहीं उठाता वह बेवकूफ़ है। अमीरों को ताकतवार बनने दिया जाय तो वे राज्य की हुकूमत में गड़बड़ डालते हैं; राज्य के काम में मनमानी करते हैं। रज़िया बेगम को अमीरों ने कैसे नाच नचाये, क्या यह तुम नहीं जानते? हममें इतनी ताकत क्यों पैदा हो कि हम लालचभरी निगाह से तख्त को देखने लगें? हमारे दिल में अपना मतलब साधने की इच्छा ही क्यों पैदा हो? हमें इतनी ही ताकत चाहिए कि

हम अपनी कौम के सिपाही बने रहें। हम लोगों की बागडोर एक ही शख्स के हाथ में हो। देखो भाई, यह सल्तनत है एक बग्घी; हम लोग इस बग्घी को खींचने वाले घोड़े हैं। हमारी लगाम अगर एक आदमी के हाथ में रहेगी तो हम इसे खींच सकेंगे और अगर सब घोड़े अपनी-अपनी मर्ज़ी से चलने लगे, तो बग्घी भी चकनाचूर हो जायगी और घोड़े भी घायल हो जायेंगे। मेरे भाई, कौम की इस बग्घी को हाँकने का काम आज अलाउद्दीन कर रहा है। हम अगर गलत चाल चलेंगे तो उसके कोड़े हमें खाने ही पड़ेंगे।

जमालखाँ—लेकिन हमें कुछ तो आज़ादी होनी चाहिए। उसे हमपर भरोसा रखना चाहिए। हम क्या खाते हैं, हम क्या पहनते हैं, कहाँ जाते हैं, कौन-कौन हमारे दोस्त हैं; इन सब बातों की खबर रखने की बादशाह को क्या ज़रूरत है? आये दिन अमीरों की बेइज़्ज़ती होती है। यह सब क्या वह अपनी कौम की भलाई के लिए कर रहा है? यह सिर्फ उसकी खुदगर्ज़ी की भूख है और कुछ नहीं। वह इस्लाम की नहीं, अलाउद्दीन की बात सोचता है। इस्लाम में हरेक भाई बराबर है, क्या बादशाह, क्या भिखारी। अपने रात-दिन के काम में सब आज़ाद हैं। फिर क्यों वह हमारी आज़ादी पर हमला करता है?

गभरू—मैं यह जानता हूँ कि अलाउद्दीन अपने आपको खतरे से बाहर नहीं समझता, और हरेक आदमी, जिसने अपनी इमारत धोखेबाजी और खून-खराबी की नींव पर खड़ी की है, कभी अपने आपको खतरे से बाहर नहीं समझ सकता। यह बीमारी है जो उसे खाये जा रही है। जो सल्तनतें मुहब्बत की बुनियाद पर खड़ी की

जाती हैं, उनकी रखवाली वक़्त अपने आप कर लेता है। कितना अच्छा होता कि जितनी ताक़त अलाउद्दीन को मिली है उसे वह मुहब्बत के मसाले से मज़बूत करता! मुझे डर है जमालखाँ, कि यह सल्तनत ज़्यादा दिनों तक क़ायम न रहेगी। हिन्दू ही नहीं, हम मुसलमान भी एक दूसरे के दुश्मन बनेंगे। गुलामों को खिलजियों ने खत्म किया, इन्हें कोई और पठान का बेटा खत्म करेगा। मुझे तो हिन्दुस्तान में न हिन्दुओं का, और न मुसलमानों का वक़्त अच्छा नज़र आता है। क्या हुआ, दो-चार सदी हम लड़ते-झगड़ते बने रहे। यह बना रहना बना रहना नहीं है।

(महरमखाँ का प्रवेश)

जमालखाँ—आइये वजीर साहब!

महरमखाँ—आप भी यहीं हैं! आप दोनों से कुछ सलाह करना चाहता हूँ।

गभरू—कहिए वज़ीर साहब!

महरमखाँ—मीर महिमा रणथंभौर में हैं। महाराव हम्मीर ने उन्हें बहुत शान से ठहराया है।

गभरू—मेरा अच्छा भाई! खुदा का शुक्र है कि उसने उसे अच्छी जगह पहुँचा दिया।

महरमखाँ—लेकिन बादशाह नहीं चाहते कि कहीं भी मीर महिमाशाह को ठिकाना मिले। उन्होंने महाराव को खत लिखा है कि वह मीर महिमा को हमारे सुपुर्द कर दें। अलाउद्दीन अब उन्हें जिन्दा रखना खतरनाक समझने लगे हैं?

गभरू—हूँ!

जमाल—क्या समझते हो मीर साहब ?

गभरू—कुछ नहीं; मैं बँधा हुआ हूँ। मेरा मुहब्बत-भरा दिल क्या चाहता है, यह शायद आप लोग नहीं समझ सकते। लेकिन, मुझे अपने दिल पर काबू पाना ही पड़ेगा।

महरम—मैंने बादशाह को बहुत समझाया कि वह राजपूतों से छेड़छाड़ न करे, लेकिन वह तो ताकत में अंधा हो रहा है। वह कहता है कि यदि हम्मीर ने मीर महिमा को मेरे सुपुर्द नहीं किया तो रणथंभौर का एक भी पत्थर साबित न रहने दूँगा। मेरी ताकत...!

जमाल—उसकी ताक़त! हमीं लोग उसकी ताकत हैं।

गभरू—हाँ, हमीं लोग उसकी ताकत हैं। आज वह हमसे कहता है तुम अपने हाथ से अपना कलेजा चीर डालो, अपने हाथ से अपनी आँखें फोड़ डालो, अपने हाथ से प्याले में विष घोलो और पी लो। या खुदा!

महरम—चलो भाई मीर गभरू, और भाई जमालखाँ! हमें इस बात पर सोचना होगा। यह बहुत ज़रूरी सवाल है।

जमाल—बेशक!

गभरू—खुदा, तुम बहुत सख्त इम्तहान ले रहे हो!

(तीनों का प्रस्थान)

[पट-परिवर्तन]

चौथा दृश्य

[स्थान—रणथंभौर में महाराव हम्मीर का राजदरबार। स्वर्ण-सिंहासन पर हम्मीर बैठे हैं, उनकी दाहिनी ओर की कुर्सी खाली है। बाईं ओर मीर महिमाशाह बैठे हैं। मीर महिमा के बाद

सुरजनसिंह हैं। कुछ और दरबारी भी बैठे हैं।]

हम्मीरसिंह—मेरे बहादुर भाइयो! आज हमारे लिए स्वर्ण-अवसर आया है। मीर महिमाशाह जैसे बहादुर हमारी जाति में शामिल हुए हैं।

एक दरबारी—हमारी जाति में······!

हम्मीरसिंह—हः हः हः! तुम डर गये भूरिसिंह जी राठौर! जाति में शामिल होने से मेरा मतलब यह नहीं कि उन्होंने हमारा धर्म स्वीकार कर लिया है। सभी बहादुरों की एक जाति है। चाहे मुसलमान हो, चाहे हिन्दू, चाहे किसी और जाति का, जो वीर है वह हमारा सगा है, वही हमारी जाति का है। इसी दृष्टिकोण से मैंने मीर महिमाशाह को अपना भाई बनाया है। जब से महिमाशाह यहाँ आये हैं, उनकी शक्ति, चातुर्य और सज्जनता ने मुझे उनका अधिकाधिक प्रेमी बनाया है। मेरी खुशी का छोर नहीं मिलता। सुरजनसिंह, लेखा को बुलवाइए। आज जम कर जलसा मनाया जाय।

सुरजनसिंह—जो आज्ञा महाराव! (अभिवादन करके प्रस्थान)

भूरिसिंह राठौर—धृष्टता क्षमा हो तो कुछ निवेदन करूँ।

हम्मीरसिंह—जो किसी की तलवार को नहीं रोकता, वह क्या किसी की ज़बान रोकेगा? दिल में रक्खे रहना राजपूतों का स्वभाव नहीं है। अपनी बात राजपूतों को अवश्य कहनी चाहिए।

भूरिसिंह—मैं अपने अतिथि का अनादर नहीं करना चाहता, उनके मुँह पर कुछ कहना सभ्यता के विरुद्ध समझता हूँ।

मीर महिमा—बहादुर आदमी साफ कहना पसंद करता है। इसमें अनादर की क्या बात! आप कहिए।

भूरिसिंह—जब कि शेष भारत पराधीनता के पाश में बँध चुका

है, हमें सावधानी से काम लेना चाहिए। इसमें संदेह करने की गुंजाइश नहीं कि मीर साहब बहुत वीर उदार और सज्जन हैं, फिर भी हमें अचानक ही किसी सज्जन पुरुष पर भी इतना विश्वास नहीं करना चाहिए। मीर साहब को आप जो सुख-सुविधा देना चाहें, दें; लेकिन रणथंभौर की सीमा में, राजनीति के अन्तःपुर में, मैं इनका प्रवेश उचित नहीं समझता।

(सुरजनसिंह का लेखा के साथ प्रवेश। दोनों का अभिवादन के पश्चात् यथास्थान बैठना)

हम्मीरसिंह—भूरिसिंह, आप मीर साहब के संसर्ग में आयेंगे तो संदेह के बादल स्वयं हट जायँगे। यह पीछे देखा जायगा, अभी तो थोड़ा मनोरंजन होने दो। (लेखा से) छेड़ो न लेखा, तुम अपनी तान। संगीत के प्रवाह में यह राजनीति की भ्रांति बह जाय; नीरस जीवन में रस की वर्षा हो।

लेखा—(गान और नृत्य)

छेड़ो वंशी की तान।
मैं नाचूँ ता-ता थैया,
तृण चरना भूले गैया,
है वायु बही पुरवैया,
है हमें न अपना ज्ञान।
छेड़ो वंशी की तान॥
पंथ रोक रहे पुरवासी,
पर बढ़ती आती दासी,
है जहाँ हृदय की काशी,

हैं चले वहीं पर प्राण ।
छेड़ो वंशी की तान ।।

तुम मरु थल में जीवन के,
आओ आओ घन बन के,
मैं नाचूँ मयूर बन के,
बरसाओ रस अनजान ।
छेड़ो वंशी की तान ।

(रणधीरसिंह का प्रवेश । हम्मीरसिंह खड़े होते हैं । अन्य दरबारी भी। संगीत रुक जाता है । रणधीरसिंह अपना आसन ग्रहण करते हैं । सब बैठते हैं ।)

हम्मीरसिंह—लो लेखा ! (पुरस्कार देते हैं) अब जाओ ।

(लेखा अभिवादन करके प्रस्थान करती है ।)

रणधीरसिंह—हम्मीर ! वीरों के जीवन में मनोरंजन को भी स्थान होना चाहिए । रेगिस्तान में कहीं ताल, बावड़ी और हरियाली न हो तो क्या वहाँ ऊँट जैसा नीरस जानवर भी रह सकता है ? किन्तु रस की वंशी बजाने का भी समय होता है ।

हम्मीर—चाचाजी, राजपूती मर्यादा का पालन करने में आपका भतीजा कभी अयोग्य सिद्ध न होगा ।

रणधीर—यह मैं जानता हूँ । तुम हमारे कुल के आशा-सूर्य हो ! हमें तुम्हारे शौर्य और बल पर विश्वास है । फिर भी आँखें बन्द करके रहना ठीक नहीं । मीर महिमाशाह की मित्रता हमारी कड़ी परीक्षा लेने वाली है । यह देखो, दिल्ली से एक दूत यह पत्र ले कर आया है ।

हम्मीर—पढ़ दीजिए चाचाजी !

रणधीरसिंह—(पत्र पढ़ते हैं)

"महाराव हम्मीरसिंह जी,

हमें यह जान कर अचरज हुआ कि आपने हमारे दुश्मन मीर महिमाशाह को पनाह दी है। आज तक हमने आपको अपना दोस्त समझा है, इसलिए आपसे अर्ज़ करते हैं कि हमारे दुश्मन को अपनी रियासत की हद से निकाल दें। अगर आपने ऐसा नहीं किया तो दिल्ली की ताकत रणथंभौर के घमण्ड को चकनाचूर करने में कुछ उठा न रखेगी।

आपका

अलाउद्दीन"

हम्मीर—दिल्ली की ताकत! जिस दिल्ली पर कभी हमारा अधिकार था, वहीं से यह धमकी आ रही है। कहिए भूरिसिंह जी, क्या किया जाय?

भूरिसिंह—राजपूत धमकी का जवाब तलवार से देता है। अभी तक मैं मीर साहब को आश्रय देने के पक्ष में नहीं था, किन्तु जब उनका यहाँ रहना हमारी राजपूती आन की परीक्षा चाहता है तो हम उससे हटना कायरता समझते हैं।

सुरजनसिंह—महाराव, वीरता अच्छा गुण है। किन्तु वीरता के अभिमान में हमें आत्म-हत्या नहीं करनी चाहिए। मुट्ठी भर सैनिकों से सुविस्तृत और सुसंगठित शक्ति का कैसे सामना किया जायगा?

मीर महिमा—महाराव, इस नाचीज़ के लिए इतनी बरबादी और तबाही क्यों न्योतते हैं! मैं अकेला ही दिल्ली के भरे दरबार में अलाउद्दीन से निबट लूँगा। मुझे जाने दीजिये।

हम्मीर—आप राजपूती आन से शायद परिचित नहीं हैं मीर साहब ! आपको जाने देना ही हमारी पराजय है ! सम्राट् पृथ्वीराज के वंशज अपने सिर पर कायरता का कलक नहीं लगने दे सकते। राजपूत शरणागत के लिए सर्वस्व न्योछावर कर देता है। रणथंभौर में जब तक एक भी राजपूत जीवित है वह आपका अंग-रक्षक बन कर रहेगा।

मीर महिमा—यह है इंसानियत का सच्चा नमूना। दिल चाहता है अपनी हस्ती को मिटा कर आपके कदमों के नीचे बिछा दूँ। अपने आपको जला कर आपकी आँखों का सुरमा बना दूँ। ऐसे इंसानों को मैं हैवानों के हवाले नहीं करना चाहता।

हम्मीर—हम हैवानों के दाँत खट्टे करना जानते हैं मीर साहब! हम अपनी आन पर अड़े हुए मर जायँगे; युग-युग को अमर हो जायँगे। यदि आपको शत्रु के हवाले कर देंगे तो जीते जी मर जायँगे।

मीर महिमा—आप हठ करते हैं।

हम्मीर—हाँ, मैं हठ करता हूँ। याद रखिए, 'तिरिया-तेल हम्मीर-हठ चढ़े न दूजी बार।' बोलो, मेरे वीर सरदारो, तुम्हें मेरा निश्चय स्वीकार है?

सब—हाँ स्वीकार है।

हम्मीर—मैंने कहा था न, आज स्वर्ण-अवसर है। अब आप लोग जायँ।

(सबका प्रस्थान)

[पट-परिवर्तन]

पाँचवाँ दृश्य

[स्थान—नलहारखोगढ़ की एक बावड़ी के पास की पगडंडी। समय—संध्या। ग्राम की स्त्रियाँ पहले दृश्य के समान ही पानी भरने जा रही हैं या भर कर आ रही हैं। पहले दृश्य वाली युवतियों का रीते घड़े लिये हुए प्रवेश।]

चपला—(गाती है)

पगली, तू किस मद में भूली?
किसने आज क्षितिज पर देखा,
गहरी क्यों है धूमिल रेखा,
लिखती नियति किसी का लेखा,
किसने जीवन की तह छू ली?
पगली तू किस मद में भूली?
आज हिल उठी है गिरि माला,
आज हुआ जीवन मतवाला,
पी-पी कर विनाश का प्याला,
सिर पर आज मृत्यु है झूली!
पगली, तू किस मद में भूली!

दूसरी युवती—रहने दो यह गीत। आज कुछ अच्छा नहीं लगता। किसी विपत्ति की छाया-सी दसों दिशाओं में दिखाई देती है।

चपला—सोचने बैठें तो जीवन ही एक बहुत बड़ी विपत्ति नज़र आवे। इसलिए मैं तो कहती हूँ, हँसते-गाते-खेलते हुए ज़िन्दगी का रास्ता पार करते चलो। किस दिन हवा के झोंके से जीवन-दीपक बुझ जायगा इसे कोई जानता है?

(उत्तर दिशा की ओर से धूल का बादल-सा उठता नज़र आता है)

दूसरी युवती—देखो, उधर उत्तर दिशा में। धूल से सारा आकाश भर गया।

(गढ़ पर से तुरही बजती है)

चपला—भागो भागो बहन ! यह तो किसी शत्रु की सेना है। सुनती नहीं हो गढ़ पर से तुरही बज रही है। आज जान पड़ा कि क्यों इतना खर्च करके गढ़ में बावड़ियाँ खुदवाई जा रही थीं। विनाश अपना षड्यंत्र रच रहा था।

दूसरी युवती—तुम कहती थीं न, हँसते-हँसते जीवन का रास्ता पार करना चाहिए। लेकिन अगर यह सेना गढ़ के फाटक और हमारे बीच में आ पहुँचे तो देखें तुम हँसते-हँसते यह पगडंडी पार कर सको, जीवन का रास्ता तो बड़ा लम्बा है।

चपला—(कपड़ों के अन्दर से कटार निकाल कर) इसे देखा है ? यह सदा हँसते रहना सिखाती है। किसकी शक्ति है कि हमारे जीवन की मुसकान में पाप की छाया डाले ? हम जब तक जीवन का पथ चल सकेंगी, पवित्र हँसी हँसेंगी। न कभी पश्चात्ताप के आँसू बहाएँगी, न कभी पाप का अट्टहास करेंगी। ऐसा ही है हम राजपूतनियों का जीवन। तुरही पुकार-पुकार कर कह रही है हमें तुरन्त गढ़ में चले जाना चाहिए। फिर फाटक बंद हो जायगा। उसके बाद न जाने कितने दिन बाद फाटक खुले। फाटक खुले भी तो कदाचित् किस्मत के फाटक बंद ही रहें।

दूसरी युवती—और किस्मत का फाटक न खुला तब ?

चपला—कुछ नहीं। इस गढ़ में राख का एक बड़ा ढेर होगा;

जिसमें राजपूतनियों के जीवन का अमरत्व छिपा होगा, और फाटक के बाहर राजपूतों के शव होंगे, जिनमें राजपूतों का तेज मुसकरा रहा होगा। चलो, अब हम चलें।

(सब का एक ओर से प्रस्थान, दूसरी ओर से मीर गभरू का प्रवेश।)

मीर गभरू—कितना बड़ा यकीन मुझ पर बादशाह ने किया है! महाराव से लड़ाई करने और अपने भाई महिमा को गिरफ्तार करके लाने का काम मुझे सौंपा है। मुझे अपने ही जिगर पर वार करने को कहा गया है।

(जमालखाँ का प्रवेश)

जमाल—क्या सोच रहे हो मीर साहब! यही न, कि भाई का गला कैसे काटूँ? अब आपकी कौम-परस्ती की जाँच हो जायगी। मैं कहता हूँ मियाँ, आपके पास इतनी फौज हैं; मुझे बताओ, अलाउद्दीन से किस बात में आप कम हैं? महाराव को भी अपना बना सकते हैं। हिन्दुस्तान की कहानी नये सिरे से लिखी जाने लगेगी।

मीर गभरू—तुम बार-बार मेरा दिल टटोलते हो जमाल! मैं अच्छी तरह जानता हूँ कि तुम अपनी कौम को धोखा नहीं दे सकते। मेरी जगह तुम होते तो तुम भी वही करते जो मैं कर रहा हूँ।

जमाल—कौम को धोखा देता! शायद मैं यह न करता। लेकिन मैं सगे भाई पर तलवार उठाने की हिम्मत न कर पाता।

मीर गभरू—तो क्या करते?

जमाल—मैं दिल्ली से यहाँ तक आता ही नहीं। वहीं जमुना में डूब कर जान दे देता। तुम वह काम करने चले हो, जिसे अच्छा कहें या बुरा कहें, कुछ भी समझ में नहीं आता।

मीर गभरू—मैं नौकर हूँ जमाल । मैंने अपनी जिन्दगी बेच दी है । दिल और दिमाग भी बेच दिया है ।

जमाल—लेकिन ईमान ?

मीर गभरू—ईमान के खिलाफ मैं कुछ नहीं कर रहा । ईमान दुनियादारी के परे की चीज़ है । अपने भाई को भाई समझना, बाकी लोगों को भाई न समझना ईमानदारी नहीं, बेईमानी है । दुनिया में सिर्फ एक माँ है और वह है खुदा । जो तुम हो वही महिमा है, वही अलाउद्दीन है, वही हम्मीर है । हम सभी भाई हैं । जब हम हम्मीर के खिलाफ तलवार उठाने में नहीं हिचकते तो महिमा के खिलाफ उठाने में क्यों हिचकें ?

(एक सैनिक का प्रवेश)

सैनिक—(कोर्निश करके) हमारे कुछ सिपाही किले में जाती हुई कुछ हिन्दू औरतों का रास्ता रोक रहे हैं ।

गभरू—उन सिपाहियों को सीधे रास्ते लाना होगा । हम मैदान में राजपूतों से तलवार बजाने आये हैं, बेचारी बेबस औरतों का रास्ता रोकने नहीं । चलो जमाल, हम उन बहनों को किले में पहुँचा दें ।

(सब का प्रस्थान)

[पट-परिवर्तन]

छठा दृश्य

[स्थान—रणथम्भौर के राजमहल के अंतःपुर का आँगन । तुलसी के पेड़ के पास महारानी देवल, राजकुमारी चन्द्रकला, तथा कुछ और क्षत्राणियाँ तुलसी पर जल चढ़ा रही हैं । पास ही थाल में

नारियल, रोली और चावल आदि टीके का सामान है।

सभी महिलाएँ गाती हैं]

विमल दूज का दिन है आया।
रण के रँग में आँखें लाल
कर के आवें माँ के लाल,
हम टीका करने ले थाल,
आईं, बन्धु सजा दें भाल।
ऊषा ने नभ लाल बनाया।
विमल दूज का दिन है आया।
वीरों से कहतीं क्षत्राणी,
जाँचो तलवारों का पानी,
जाँचो अपनी आज जवानी,
फैले जग में कीर्ति-कहानी,
रण का गान गगन ने गाया।
विमल दूज का दिन है आया।
एक गोद में हम तुम खेले,
एक साथ हैं सुख-दुख झेले,
अब जाते हो वीर अकेले,
माँ के करने दूर झमेले,
ज्वाला ने है हमें बुलाया।
विमल दूज का दिन है आया।

(हम्मीरसिंह, मीर महिमा तथा राजकुमार जय विजय और अजय का प्रवेश)

हम्मीर—मीर साहब, आप हमारे होली के त्योहार में शामिल हो चुके हैं। रंग की होली आपने खेली ही थी। आज हम अपना भैया-दूज का त्योहार दिखाने आपको लाये हैं।

मीर महिमा—मुझपर हिन्दुओं का रंग चढ़ चुका है। ऐसे त्योहारों में शामिल होने के लिए मेरा जी तड़पता रहता है।

हम्मीर—होली के दिन हम लोग प्रेम के रंग में सिर से पैर तक डूब जाते हैं। इस दिन न कोई बड़ा होता है न छोटा। सबको मनमानी करने का अधिकार होता है। प्रकृति ने हमें जिस स्वाभाविक रूप में भेजा है, वही रूप हम होली के दिन धारण करते हैं। हृदय, आत्मा, शरीर सब कुछ रंगीन हो उठता है। आनन्द के तांडव में हम भेद-भाव, भूत-भविष्य, पाप-पुण्य सब भूल जाते हैं। ओह! कितनी तन्मयता कितना रस और कितना आनन्द है हमारे इस त्योहार में!

मीर महिमा—मैं तो चाहता हूँ, यह मस्ती ज़िन्दगी भर बनी रहे।

जय—संसार का कठोर सत्य हमारा रंग फीका कर देता है।

विजय—पिचकारी छोड़ कर हमें तलवार पकड़नी पड़ती है।

(सहसा चपला का प्रवेश। चपला के वस्त्र अस्त-व्यस्त, सिर उघड़ा हुआ, बाल फैले हुए, और हाथ में रक्त से रँगी हुई नंगी तलवार है।)

चपला—और रंग की नहीं रक्त की होली खेलनी पड़ती है।

राजकुमारी—(आगे बढ़ कर चपला का हाथ पकड़ कर) तुम चपला! तुम्हारा यह क्या हाल है?

चपला—क्षत्राणियों का सदा यही रूप रहा है राजकुमारी!

वे हृदय की आरसी में देखें तो उन्हें दिखाई दे कि उनके सिर का सिंदूर अपने ही खून से रँगा हुआ होता है।

राजकुमारी—तुम्हारी माँग का सिन्दूर क्या हुआ ?

चपला—उसे अलाउद्दीन की जीभ चाट गई। तीन दिन से नलहारणोगढ़ में रक्त की होली खेली जा रही थी।

हम्मीर—हमने चाचाजी की अधीनता में सेना भेजी है।

चपला—पर अब क्या है ? गढ़ समाप्त ही गया। पुरवासी, जो विध्वंस से बचे, भाग कर दूसरे स्थान पर चले गये। मेरे पिता, पति, भाई सब···

महारानी—(चपला के सिर पर हाथ रख कर) बेटी, हमारे रहते तुम्हें क्या अभाव है ?

चपला—माँ, अभाव! सारे संसार का रक्त भी सिंदूर की लाली से हलका है।

महारानी—यह सच है बेटी! पर क्षत्राणियाँ विधवा होने पर भी विधवा नहीं होतीं। उनके पति मर कर भी नहीं मरते। उनकी सेज···

चपला—चिता की ज्वाला पर बिछती है! पर मैं उस सेज पर सोने से भाग आई हूँ। मुझे कुछ नर-पशु पकड़ कर बादशाही हरम में पहुँचाने चले थे, मैं उन्हें यमलोक पहुँचा आई हूँ।

मीर महिमा—शाबाश बहन!

चपला—होली के दिन मेरा सुहाग नष्ट हुआ है, जब तक मैं देश के आबाल-वृद्ध में प्रतिहिंसा की होली नहीं जला दूँगी, विश्राम न लूँगी। गली-गली, पथ-पथ घूम-घूम कर प्रतिशोध-गान गाऊँगी।

हम्मीर—बेटी, तुम्हारा गीत हमारे प्राणों में सदा गूँजता रहता है।

जय—बहनों के संकेत पर अपने मस्तक चढ़ाने को हम सदा प्रस्तुत रहते हैं !

विजय—बहन, तुम घर में बैठ कर हमें आशीर्वाद दो, शत्रु की नृशंसता स्वयं देश के प्राणों को जगा देगी। शत्रु के रक्त से हम तुम्हारी सूनी माँग को रँगेंगे।

चपला—मेरे प्राणों की ज्वाला क्या मुझे चुप रहने देगी ? यह तुम्हारी उदारता है कि मामूली किलेदार की बेटी को अपनी बहन कहते हो।

हम्मीर—नहीं बेटी, क्षत्रियों में कोई बड़ा छोटा नहीं। हम सभी एक तेज के कण हैं। व्यवस्था के लिए कोई सिंहासन पर बैठा है, कोई द्वार पर खड़ा है। वास्तव में हम सब भाई-भाई हैं। जिस दिन राजपूत एक दूसरे को छोटा-बड़ा समझने लगेंगे, उनका बल क्षीण हो जायगा।

महारानी—आज भैया दूज है। हमें भाइयों का टीका करना है। मीर साहब, आप हमारे मेहमान हैं, अतिथि हैं। हिंदू अतिथि को देवता के तुल्य मानते आये हैं, इसलिए सबसे पहले आपका टीका होगा।

मीर महिमा—मेरी क़िस्मत आज जागी है। क्षत्राणी के पाक हाथों का टीका मेरी ज़िंदगी को पाक कर देगा। जिनके सर पर यह टीका लगता है, उनसे सूरज-चाँद भी डाह करते हैं। आपने मुझे अपना भाई माना है, इससे मेरा दिल फूला नहीं समाता।

(मीर महिमा आगे बढ़ता है)

(महारानी मीर महिमा के मस्तक पर टीका करती हैं)

मीर महिमा—(थाल में एक हार रखता है) मेरे पास है ही क्या जो आपकी भेंट करूँ। यह ज़िंदगी का फूल है, जिसमें सुगन्ध है या नहीं, लेकिन काँटे तो ज़रूर हैं, यह मैं जानता हूँ। तुम्हारे भाई ने तुम्हारी मुसकराती हुई बगीची में काँटे बिछा दिये हैं।

राजकुमारी—(जय, विजय और अक्षय से) आओ भाई जय, विजय और अक्षय, रोली-चंदन को कृतार्थ करो।

(जय, विजय और अक्षय टीका कराते हैं और
थाल में एक-एक हार रखते हैं)

जय—बहुन, कौन जाने फिर यह त्योहार देखने का अवसर हमें मिले या नहीं! किसे पता तुम्हारा यह तिलक हमें मृत्यु के राज्य का सम्राट् ही बना दे।

चपला—और मैं भी तिलक करूँगी। मैं सर्वस्वहीना हूँ। मेरे पास न रोली है, न चंदन। मेरी तलवार में जो रक्त लगा हुआ है उसी से मैं टीका करूँगी। बदले में हार नहीं, सिर माँगूँगी। बोलो कुमार, दोगे! साहस हो तो आगे बढ़ो।

(तीनों राजकुमार आगे बढ़ते हैं। चपला तलवार में लगे रक्त से
अँगूठा गीला करती है और राजकुमारों के भाल पर टीका
लगाती है। सभी क्षत्राणियाँ गाती हैं)

वीरों से कहतीं क्षत्राणी,
जाँचो तलवारों का पानी…

[पटाक्षेप]

———

दूसरा अंक

पहला दृश्य

[स्थान—छाछगढ़ के पास के बन की एक पगडंडी ।]

(दो राजपूत सैनिकों का प्रवेश)

पहला सिपाही—भाई गुमानसिंह ! यह युद्ध तो द्रौपदी के चीर की तरह लंबा होता जाता है ।

दूसरा सिपाही—भाई गंभीरसिंह ! सुनते हैं, अलाउद्दीन का दिमाग ठिकाने आ चला है । वह महाराव से संधि-चर्चा करने लगा है ।

गम्भीरसिंह—हमारे महाराव की दृढ़ता के आगे कौन नहीं झुकेगा ? लेकिन अलाउद्दीन आत्म-सम्मान को मिट्टी में मिला कर दिल्ली लौट जायगा, यह भी हमें सत्य नहीं जान पड़ता ।

गुमानसिंह—मैं भी यही सोचता हूँ । इन छह महीनों में हमारे देश का जो सर्वनाश हुआ है, क्या इसे महाराव देख नहीं पाते ? गाँव के गाँव जल कर राख हो चुके हैं । कोई घर ऐसा नहीं, जिसका कोई न कोई सदस्य रणभूमि में न सोया हो । यह युद्ध हमें ही अधिक हानि पहुँचा रहा है । फिर बादशाह क्यों सन्धि करने लगा ? ।

गम्भीरसिंह—यह तो सच है गुमान, कि धन और जन में हम बादशाह की शक्ति की बराबरी नहीं कर सकते । वह वर्षों तक इसी प्रकार गढ़ को घेरे रह सकता है । हाँ हमें आशा है तो केवल महाराव के रण-कौशल से । उन्होंने न केवल गढ़ के भीतर से ही युद्ध करने की रक्षणात्मक नीति का पालन किया है बल्कि चाचा रणधीर-सिंह जी को उन्होंने बाहर से आक्रमण करने का कार्य सौंपा हुआ

है। छाछगढ़ में अपना अड्डा बना कर वे शत्रु पर आक्रमण करते हैं।

गुमान—चाचा रणधीरसिंह यद्यपि बूढ़े हो चले हैं लेकिन उनका शौर्य आज भी जवानी को लज्जित करता है। उनकी वाणी में आज भी जादू है, आँखों में बिजली है, हाथों में प्रलय है। जिस तरफ निकलते हैं, शत्रु की सेना काई की तरह फट जाती है। वे तीर की तरह घुसते चले जाते हैं।

गम्भीर—उन्होंने चौहानों की कीर्ति को उज्ज्वल कर दिया है। जब वे दाँतों में घोड़े की लगाम पकड़े दोनों हाथों से तलवार घुमाते हुए आगे बढ़ते हैं, हम लोगों के हृदय में जोश का तूफान उठ खड़ा होता है। प्राण पागल हो उठते हैं।

गुमान—उस दिन का दृश्य तो हमें भुलाये नहीं भूलता, जब मेघमाला में चमकती हुई तड़ित-रेखाओं-सी शत्रु-दल की तलवारों के बीच वह निर्भय आगे बढ़ते चले गये थे। उनको इतने संकट में देख कर क्या हम लोग पीछे रह सकते थे? देखते देखते वह आश्चर्यजनक कांड हुआ जिसे देख कर दिशाएँ दंग रह गईं। हमारी आधी सेना शत्रु-दल को चीर कर उनके पीछे जा पहुँची और तब आगे और पीछे दोनों ओर से शत्रु पर आक्रमण हुआ। दिल्ली की सेना भयभीत हो गई। संख्या में हम कम थे फिर भी शत्रु-सैनिक घिर गये थे।

गंभीर—यह हमारा सौभाग्य है कि हमें ऐसे वीर पुरुष की अधीनता में युद्ध करने का अवसर मिला है। चलो भाई देर होगी। में न जाने क्यों आज छाछगढ़ में पहुँचने का आदेश मिला है। चलो, जल्दी चलो।

(दोनों का प्रस्थान। दूसरी ओर से जमालखाँ और मीर गभरू का प्रवेश)

जमाल खाँ—भाई, हमें तो आसार अच्छे नज़र नहीं आते। कहाँ मुट्ठी भर राजपूत और कहाँ दिल्ली की इतनी भारी फौज! क्या पहले भी कभी हमें इस तरह मुँह की खानी पड़ी है। हम जहाँ भी गये हैं फतह का सेहरा बाँध कर लौटे हैं।

मीर गभरू—और इस बार घर से ही कफ़न ले कर चले हैं, क्यों न!

जमालखाँ—सिपाही तो हमेशा ही सर पर कफ़न बाँधे रहता है। उसकी सेज के नीचे ही उसकी क़ब्र बनी रहती है।

मीर गभरू—हर इंसान की सेज के नीचे ही उसकी क़ब्र खुदी रहती है। जो आँखोंवाला होता है वही देख पाता है। छोड़ो मीठी बातों को; यह बताओ कि अब हमें क्या करना चाहिए। तुम नहीं जानते जमाल, हमारे दुश्मन बादशाह के कान भर रहे होंगे कि गभरू अपने भाई को मौत के मुँह से बचाने के लिए लड़ाई सुस्ती से चला रहा है; नहीं तो मुट्ठी भर राजपूत, ये बुझते हुए चिराग, हमारी फौज की आँधी के आगे कितनी देर टिक सकते हैं? मैं जल्द से जल्द यह लड़ाई खत्म करना चाहता हूँ। कोई यह न कह सके कि भाई की मुहब्बत ने मुझे नमकहराम या बेईमान बना दिया।

जमाल—क्या मुहब्बत करना बेईमानी है?

मीर गभरू—नौकरी के वक्त मुहब्बत करना वास्तव में बेईमानी है। मालिक की जिन्दगी में नौकर की ज़िन्दगी मिल चुकी होती है। मालिक की ख्वाहिशें ही नौकर की ख्वाहिशें हैं। जो मालिक का दुश्मन है, वह मेरा भी दुश्मन है।

जमाल—उस दिन मीर महिमा को देखा था, जब राव रणथं

सिंह और उन्होंने हमारी फौज पर हमला किया था। उन्होंने तीरों की बौछार से आसमान भर दिया था। जिस तरह सूरज से हर तरफ किरणें फैलती हैं, इसी तरह वे तीरों को फैला रहे थे, और मुँह लाल हो रहा था। वह ठीक सुबह का सूरज मालूम होते थे।

मीर गभरू—उसकी किरणों ने आसमान ही नहीं ज़मीन भी लाल कर दी थी। मेरा जी करता था कि लड़ना छोड़ कर सिर्फ लड़ाई देखता रहूँ। सच जमाल, उसने अपने खानदान का नाम रोशन कर दिया।

जमाल—लेकिन आप ही तो कहते थे कि कौम का सवाल जब सामने आवे, अपनी या अपने खानदान की इज़्ज़त, जान और माल को कुर्बान कर देना चाहिए। इस निगाह से देखा जाय तो क्या उन्होंने अपनी ताकत कौम के खिलाफ इस्तेमाल करके अच्छा काम किया है।

मीर गभरू—उसने अच्छा किया या बुरा यह मैं नहीं सोच पाता। हम नहीं जानते कि अलाउद्दीन का हुक्म कौम का ही हुक्म हैं, और अलाउद्दीन का दुश्मन कौम का दुश्मन है।

जमाल—शायद लड़ाई के मैदान में भाई का चेहरा देख कर आपको यह इल्म हुआ है।

मीर गभरू—कौम पर जान देने का मैं हमेशा दम भरता रहा हूँ, लेकिन लड़ाई के मैदान में हम्मीर, रणधीर और महिमा को साथ-साथ देख कर मेरे यकीन को ठेस पहुँचती है। जब मैंने महिमा को हम्मीर के साथ खड़े देखा तो मेरे दिल ने सवाल किया कि क्या ये दोनों एक कौम के नहीं है? और जब मैंने अपने आपको महिमा के

सामने खड़े पाया तो मैंने सोचा कि हम दोनों अलग-अलग कौम के तो नहीं है ? मैंने वहुत सोचा और सोच कर इस नतीजे पर पहुँचा कि सारे इंसान एक कौम के बंदे हैं।

जमाल—फिर ये लड़ाइयाँ क्यों होती हैं ?

मीर गभरू—कौमों से कौमों की लड़ाई नहीं होती जमाल। यह तो इंसान की ख्वाहिशें लड़ती हैं ! अलाउद्दीन इस्लाम नहीं है। हम्मीर हिन्दू धर्म नहीं है। एक है दिल्ली का वादशाह और एक रणथंभौर का राजा। दिल्ली का बादशाह रणथंभौर के राजा को अपना गुलाम बनाना चाहता है, और वह अपनी आज़ादी वनाये रखना चाहता है। दोनों का घमंड इतने लोगों का खून करा रहा है।

जमाल—घमंड ! क्या घमंड बुरी चीज़ है ? जिस इंसान को अपनी आज़ादी प्यारी नहीं, जिसे अपना गरूर नहीं, क्या वह इंसान है ? महाराव एक मुसलमान भाई की खातिर अपनी सारी कौम पर आफत बुला चुका है। उसे घमंडी कैसे कह सकते हैं ?

मीर गभरू—ज़माल, शायद तुम ठीक कहते हो। महाराव का इरादा ऊँचा है, इसलिए उसके घमंड की इज़्ज़त करनी चाहिए। ऊँचे इरादे के लिए जान देने वाले मर कर भी ज़िन्दा रहते हैं।

जमाल—इस ऊँचे खयाल में क्यों न हम भी महाराव का साथ दें ?

मीर गभरू—हम जिस सरफ खड़े हैं, उसी तरफ ईमानदारी से खड़े रहें, इसी में हमारी खूबसूरती है। सुना है, बादशाह हमारे कुछ न कर सकने से नाराज़ हुए हैं। वे खुद दिल्ली से चल पड़े हैं। मैं चाहता हूँ, उनके आने के पहले-पहले हम रणथंभौर को खत्म कर दें।

इसलिए मैंने पहले छाछगढ़ पर हमला करके इसी पर कब्ज़ा करना ज़रूरी समझा है। यहीं से राव रणधीरसिंह अपना जाल बिछाते हैं।

जमाल—ठीक। रणधीरसिंह को घेर कर बेकार कर दिया जाय तो हमारा रणथंभोर का घेरा भी ज़्यादा सुभीते से, ज़्यादा ज़ोर से जारी रह सकेगा।

मीर गभरू—चलो, अब चलें।

(दोनों का प्रस्थान)

[पट-परिवर्तन ।]

दूसरा दृश्य

[स्थान—रणथंभोर का शिवालय। समय—अर्धरात्रि। महाराव हम्मीर शिव-प्रतिमा के आगे हाथ जोड़े बैठे हैं और तन्मय हो कर गा रहे हैं।]

हम्मीर—शंकर, रुद्र रूप दिखलाओ।

काले-काले विषधर तन पर,
मुंड-माल लटकाये उर पर,
विमल रमाये भस्म वदन पर,
विष पीते मुसकाते आओ।
शंकर, रुद्र रूप दिखलाओ।

प्रभो, दिखाओ तांडव नर्तन,
थर-थर काँपे वसुधा का मन,
खुले तीसरा ज्वाला-लोचन,
अपना डमरू, देव बजाओ।
शंकर, रुद्र रूप दिखलाओ।

ताल-ताल पर अवनी-अंबर,
डोलें, गिरें तारिकाएँ झर,
प्रलय मचा दो, हे प्रलयंकर,
शिव, जग के वैषम्य मिटाओ।
शंकर, रुद्र रूप दिखलाओ।

[हम्मीर इसी प्रकार गा रहे हैं, पीछे से महारानी देवल आ कर घंटा बजाती हैं। महाराव घूम कर देखते हैं।]

हम्मीर—आओ मेरी भवानी! अर्धरात्रि के अन्धकार में...

महारानी—मेरे शंकर, जिस हृदय में तुम्हारा निवास है, वहाँ क्या अन्धकार रह सकता है? कहो, रुद्र के आगे प्रलय की कामना क्यों कर रहे हो?

हम्मीर—प्रलय की कामना क्यों कर रहा हूँ? इन करुणामय भोलानाथ को विध्वंस की ज्वाला जलाने को क्यों उत्तेजित कर रहा हूँ? इसका उत्तर संसार के दीन-दुखी पीड़ित प्राणों से पूछो। स्वार्थ की मदिरा पी कर मानवता आज उन्मत्त हो गई है। दूर क्यों जाती हो, हमारे ही राज्य के ग्रामों को देखो। उन बेचारों का क्या अपराध है? जब तक बादशाह अलाउद्दीन स्वयं रणभूमि में नहीं आया था, तब तक केवल सेना ही सेना से युद्ध करती थी। अब तो सारा देश उजाड़ा जा रहा है। संपूर्ण प्रजा में त्राहि-त्राहि मच गई है। इसलिए आज मैं प्रलय का आह्वान कर रहा हूँ।

महारानी—निराशा के अंधकार के पीछे आशा का अरुणोदय नहीं देख पाते मेरे शंकर! प्रलय तो शिव को भी समाप्त करेगी और अशिव को भी। ऐसी अंधी आँधी न उठाओ मेरे देवता! जब तक

हाथों में शस्त्र पकड़ने की शक्ति है, क्षत्रिय-धर्म का पालन करो, लेकिन विवेक के साथ। जब तक हृदय में धड़कन बाकी है, तब तक विवेक की वंशी को बन्द न होने दो। शस्त्र की शक्ति के सामने प्रेम के बल को भूल न जाओ। शंकर की जटाओं से करुणा की धारा बही है, उसके भाल पर चन्द्र अवस्थित है, जिसमें प्रेम का शीतल प्रकाश है और दया का अमृत है। सर्व-संहारक में इतनी दया है कि वह दूसरों का विष भी स्वयं पी लेता है।

हम्मीर—मैं विपत्ति का वज्र स्वयं झेलने को तैयार हूँ, किन्तु शक्ति और साधनहीन प्रजा! बोलो देवि, वह किसलिए इतना कष्ट सहे? मैं निराश भी नहीं हूँ, और न संधि या शान्ति का इच्छुक। शीघ्र ही गढ़ से बाहर निकल कर शत्रु से लोहा लेना चाहता हूँ। अपने हठ की सजा प्रजा को देने से क्या लाभ?

महारानी—आपकी दृढ़ता पर मैं कैसे संदेह कर सकती हूँ? आप इतने दृढ़ हैं कि जितनी रणथंभौर की चट्टानें भी नहीं। आप शत्रु से शीघ्र ही निपटारा करना चाहते हैं। प्रजा का कष्ट आपको बेचैन कर रहा है। किन्तु, जिस तरह आप मेरे स्वामी हैं, उसी तरह प्रजा के भी। जिस प्रकार आप मेरे सुख का ध्यान रखते हैं, उसी प्रकार प्रजा के भी। यदि मैं आपके लिए कष्ट सहने में सुख अनुभव करती हूँ तो प्रजा क्यों न करेगी? प्रजा का धर्म है राजा के लिए प्राण तक दे डालना।

हम्मीर—मुझे किसी पर शासन करने का अधिकार ही क्या है जो ज़बरदस्ती उनका स्वामी बन बैठा हूँ......

महारानी—ज़बरदस्ती! जो ज़बरदस्ती राजा बन बैठते हैं, उनकी

प्रजा उन राजाओं को असह्य बोझ समझती है। किन्तु आप तो प्रजा की इच्छा से सिंहासन पर बैठे हैं। आपने अपने ऊपर प्रजा की रक्षा और व्यवस्था का भार डाल कर अपने गले में कष्टों का भी हार पहन लिया है। इस कष्ट-सहन में कितना आनन्द है, यह मैं समझ पाती हूँ। राजपूतनियाँ अपने स्वजनों को सर्वनाश के मुँह में झोंक कर स्वयं ज्वाला की गोद में बैठ कर क्यों मुसकराती हैं? एक दूसरे के लिए कष्ट-सहन ही तो प्रेम की कसौटी है प्रियतम! प्रजा भी अपने राजा के लिए कष्ट सहने में आनन्द पाती है।

(सुरजनसिंह का प्रवेश)

सुरजन—जय शिव महाराव!

हम्मीर—ओहो, सुरजन! तुम अचानक यहाँ कैसे आये?

सुरजन—बड़ी देर से आपकी खोज में हूँ। पहले महल में गया, वहाँ ज्ञात हुआ आप शिवालय में हैं। महाराव, क्यों अपने जीवन के साथ खिलवाड़ कर रहे हैं? दिन भर युद्ध-संचालन और रात को शंकर की आराधना! राजा को क्या ज़रा भी विश्राम न लेना चाहिए?

हम्मीर—विश्राम! नहीं सुरजन, जो ज्वाला की चिता पर सोता है, उसे नींद कहाँ? राजा को देश की, जाति की, वंश की और न जाने ऐसी ही कितनी मर्यादाएँ पालन करनी पड़ती हैं। जो राजा सुख की नींद सो सकता है, वह राजा नहीं, वसुधा का अभिशाप है। यह तो बताओ, मुझे किसलिए खोज रहे थे?

सुरजन—महाराव, कई दिनों से आपकी सेवा में कुछ निवेदन करना चाहता था। किन्तु साहस नहीं होता।

हम्मीर—कहो न!

सुरजन—महाराव, आपकी शक्ति का परिचय संसार को मिल गया। मीर महिमाशाह इतने बहुमूल्य तो नहीं कि उनकी खातिर सारा देश उजड़वा डाला जाय। आज हमारे सामने यह प्रश्न उपस्थित है कि देश और मीर महिमाशाह में से एक को चुन लें।

महारानी—सुरजनसिंह ! आज आप कैसी भटकी-भटकी बातें करते हैं ? क्या किसी क्षत्रिय ने कभी शरणागत की रक्षा से मुँह मोड़ा है ? क्षत्रिय के प्राण भले ही चले जायँ, उसका क्षत्रियत्व नहीं जाना चाहिए। जिस दिन शरणागत क्षत्रिय के द्वार से लौटेगा, उस दिन क्षत्रियत्व रसातल को चला जायगा !

सुरजन—वह विदेशी है, विधर्मी है।

महारानी—कोई भी हो, शरणागत शरणागत है।

सुरजन—इसका परिणाम !

महारानी—कुछ भी हो। सम्राट् पृथ्वीराज के वंशजों को परिणामों से क्या डराते हो सुरजनसिंह ! विपत्तियों से वे डरते नहीं। आज उनका साम्राज्य नष्ट हो गया, लेकिन उनका आत्म-तेज तो बाकी है। जिन्होंने क्षत्रिय-धर्म का पालन करते हुए साम्राज्य को भी गँवा दिया, क्या वे छोटे से राज्य की परवा करेंगे।

[संन्यासिनी के वेश में चपला का प्रवेश]

चपला—जय शंकर !

महारानी—कौन ? चपला !

चपला—हाँ मैं ही हूँ और साथ में एक भयानक समाचार ले कर आई हूँ।

महाराव—क्या ?

चपला—शत्रु ने छाछगढ़ पर अधिकार कर लिया।

हम्मीर—और चाचा!

चपला—राव रणधीरसिंह जी रणभूमि में शंकर के गण बन कर अवतरित हुए। हज़ारों लाशों को सिरहाने रख कर वे सदा के लिए सो गये।

हम्मीर—हाय चाचाजी, मेरे हठ ने आपकी बलि ले ली!

सुरजन—महाराव, अब भी चेत जाइए। राव रणधीरसिंहजी हम सभी को पिता-तुल्य थे। उनका अभाव प्राणों का सदा सालता रहेगा। वे व्यवहार में कितने सौम्य और युद्ध में कितने भयंकर थे! वे देवता थे, देवता। मीर महिमा हमारे लिए शनि बन कर आया है। वह सब कुछ लील जायगा।

हम्मीर—ज़बान पर लगाम लगाओ सुरजन! शरणागत का अपमान करना क्षत्रिय की जिह्वा का धर्म नहीं है। जो विपत्ति आती है, वह किसी को कोसने से दूर नहीं हो सकती। क्षत्रिय का वज्र-हृदय सब कुछ सहन कर लेगा। महारानी, चाचाजी की मृत्यु भयंकर विभीषिका की पूर्व सूचना है। बोलो देवि, कर्त्तव्य की बलि-वेदी पर मुझे अपना शीश चढ़ाने की आज्ञा देती हो?

महारानी—आपका यश ही मेरी माँग का सिन्दूर है प्रियतम! और इसका भी विश्वास रखो देवता, तुम्हारी भवानी शिवलोक में तुम्हारी बगल में बैठी होगी। अग्नि-रथ हम दोनों साथ चलेंगे!

चपला—लेकिन महाराव, शायद वह सौभाग्य आपको शीघ्र न प्राप्त हो। जब तक देश का एक-एक पुरुष लड़ता हुआ जान नहीं दे देगा तब तक महारानी को अग्नि-रथ पर नहीं बैठना पड़ेगा। मैं प्रजा

में घूमती हूँ, उन्हें युद्ध के लिए उत्तेजित करती हूँ। देश ने अभी दिल्ली की सेना से आतंकित हो कर साहस नहीं छोड़ा है। प्रजा महाराव के शौर्य और आत्म-त्याग पर मुग्ध है और इनके लिए सर्वस्व समर्पित करने को प्रस्तुत है। नलहारखोगढ़ गया, छाछगढ़ भी गया, लेकिन इस विध्वंस ने लोगों को उत्तेजना की शराब पिला दी है।

महारानी—क्या सारी रात शिवालय में काटनी है?

हम्मीर—मैं तो भूल ही गया था, चलो।

(सब का प्रस्थान)

[पट-परिवर्तन]

तीसरा दृश्य

[स्थान—छाछगढ़ का राज-भवन। अलाउद्दीन अपने सेना-नायकों के साथ बैठा है। अलाउद्दीन के एक तरफ मीर गभरू और दूसरी तरफ जमालखाँ बैठे हैं।]

अलाउद्दीन—छाछगढ़ की फतह ने हमारा आगे का काम आसान कर दिया है।

जमालखाँ—हमें रणथंभौर गढ़ के भीतर की फौज का इतना डर नहीं है, जितना कि रणधीरसिंह के मातहत गढ़ से बाहर लड़ने वाली फौज से था। आये दिन हमारी रसद लूट लेना, दिल्ली से आने वाली फौज को रास्ते में ही रोक लेना, रात को अचानक छापा मारना, भूत की तरह वह कब कहाँ सामने आ खड़ा होगा, इसका कुछ पता ही न चलता था।

अलाउद्दीन—दर-असल उस बूढ़े में कमाल की फुर्ती और बला

की हिम्मत थी। जिस वक्त मैंने उसे अपने मुट्ठी भर साथियों के साथ हमपर हमला करते देखा मेरा जी चाहता था कि उसके कदमों पर सर झुका दूँ।

मीर गभरू—आप भी दुश्मन की तारीफ करते हैं ?

अलाउद्दीन—क्यों न करूँगा मीर ! मैं सेज बिछा कर सोने वाला और फौज को लड़ाई के मैदान में सर कटवाने को आगे बढ़ाने वाला बादशाह नहीं हूँ। मीर साहब, लड़ाई के मैदान में एक मामूली सिपाही की हैसियत से आपका हुक्म बजाना अपना फर्ज समझता हूँ और तख्त पर बैठ कर आपको हुक्म देना भी। जो खुद तलवार चला सकता है वह दूसरे की तलवार की धार की तारीफ करना बुरा नहीं समझता। राजपूत बहादुरी में हम लोगों से कम नहीं हैं, यह तो मानना पड़ेगा।

मीर गभरू—और इंसानियत में भी वे हमसे ओछे नहीं हैं।

अलाउद्दीन—इंसानियत के माने तबदील होते रहते हैं मीर साहब ! मैंने बहुत से ऐसे काम किये हैं जिन्हें शायद इंसानियत न कहा जाय। रणथंभौर गढ़ पर हमला करना भी शायद इंसानियत के खिलाफ है। लेकिन तुम्हीं सोचो, इंसानियत के असूलों पर कायम रहने से क्या सारे हिन्दुस्तान को हम अपने झंडे के नीचे लाने में कामयाब हो सकते हैं ? अगर गौर से सोचा जाय तो लड़ाई करना भी इंसानियत के असूलों के खिलाफ है। यह दुनिया शुरू से ही गलत रास्ते पर चल पड़ी है। यहाँ इंसानियत पर कायम रहने से अपना सर भी कायम रखना मुश्किल हो जाता है मीर साहब ! हमें सिर्फ अपना मकसद देखना होता है, उस मकसद तक पहुँचने के लिए हम

किन तरीकों को इस्तेमाल करते हैं, यह सोचना फ़िज़ूल है।

मीर गभरू—हम आपके नौकर हैं। आपका हुक्म मानना ही हम इंसानियत हम समझते हैं। लड़ाई के मैदान में तलवार चलाना हम जानते हैं। किस मकसद के लिए वह तलवार चल रही है, यह सोचना हमारा काम नहीं है।

अलाउद्दीन—आप जैसे वफ़ादार साथियों पर मुझे फख़ है। क्या यह अलाउद्दीन की ताकत थी जिसने हिन्दुस्तान के कोने-कोने में फ़तह का डंका बजाया है। आप लोगों की मिली हुई हस्तियों का नाम ही दिल्ली का बादशाह है। जब तक हम एक दूसरे से मिले हुए हैं, तभी तक हमारी सल्तनत कायम है। जिस दिन आप लोग अपनी आँखों से देखने लगेंगे, अपने दिमाग से सोचने लगेंगे, अपने दिल से जाँचने लगेंगे, उस दिन सल्तनत की ताकत टुकड़े-टुकड़े हो जायगी।

मीर गभरू—जी हाँ, आप दिमाग हैं और हम लोग हाथ-पैर। आप सोचें और हम काम करें, इसी में आपकी और हमारी खैर है।

अलाउद्दीन—भाई गभरू, मुझे अब अफ़सोस होता है कि क्यों गुस्से में आ कर मीर महिमा को निकाल दिया। रणथंभौर गढ़ को मैं लेना चाहता था। मीर महिमा को ठहरा कर हम्मीर ने मुझे जल्द मौका दे दिया। मैंने दक्खन में जो सल्तनत बढ़ाई है उसके रास्ते में राजपूतों की रियासतें खतरे का सबब है। इन्हें खत्म करना ही होगा। चित्तौड़ वालों से लड़ने के लिए हमें यहाँ अपनी कोई जगह चाहिए। इसीलिए मैंने रणथंभौर पर चढ़ाई की है। मीर महिमा तो सिर्फ़ एक बहाना है। मुमकिन है कि रणथंभौर को लेने के

बाद में तुम्हारे भाई को माफ भी कर दूँ।

मीर गभरू—मुझसे यह कहने की ज़रूरत नहीं है। जहाँ तक दिल्ली की सल्तनत को फैलाने और महफूज़ रखने का सवाल है गभरू की तलवार अपनी गरदन पर चलने को तैयार है। सल्तनत की शान के सामने भाई की मुहब्बत की कोई हस्ती नहीं है बादशाह सलामत। यह ठीक है कि लड़ाई के मैदान में जब मैं अपने भाई को सामने देखता हूँ तो हाथ की तलवार थम जाती है। जी करता है भाई को गले लगा लूँ। लेकिन थोड़ी ही देर में मैं होश में आ जाता हूँ। मैं समझने लगता हूँ कि मेरा न कोई भाई है, न कोई मेरी माँ थी, न कोई मेरा बाप था। सिपाही का दुनियाँ में सिवा उसके फर्ज़ के और कोई नहीं है। वह समझता है कि उसके सामने जो लोग खड़े हैं उनके भी न माँ है, न बाप, न भाई, न बहन, न औरत, न लड़का न लड़की। जो सिपाही है, उसके दिल की जगह पत्थर होता है।

अलाउद्दीन—मैं तुम्हारे दर्द को समझता हूँ मीर साहब। आप अपने आपको धोखा देना चाहते हैं। लेकिन भाई, मैं सब कुछ साफ देख रहा हूँ। तुम्हारे दिल की धड़कन मेरे दिल में भी बज रही है।

(दरबान का प्रवेश)

दरबान—(कोर्निश करके) एक राजपूत सरदार मिलना चाहता है।

अलाउद्दीन—यहीं भेज दो।

(सैनिक का कोर्निश करके प्रस्थान)

मीर गभरू—कौन राजपूत सरदार आया है ?

अलाउद्दीन—आप अब जा सकते हैं।

(कोर्निश करके सेनानायकों का प्रस्थान)

अलाउद्दीन—क्या महाराव हम्मीरसिंह सुलह करने को तैयार हो गये हैं ? राजपूत सरदार के आने का क्या मकसद हो सकता है ?

(सुरजनसिंह का प्रवेश और अलाउद्दीन को अभिवादन करना)

अलाउद्दीन—आइए, तशरीफ रखिए। आप कहाँ से आ रहे हैं ?

सुरजन—रणथंभौर गढ़ से ?

अलाउद्दीन—आपका इस्मशरीफ ?

सुरजन—जी, मुझे सुरजनसिंह कहते हैं। मैं रणथंभौरगढ़ का कोषाध्यक्ष हूँ।

अलाउद्दीन—कहिए, क्या महाराव ने सुलह करने के लिए आपको भेजा है ?

सुरजन—नहीं, संधि करना चौहानों ने नहीं सीखा है।

अलाउद्दीन—मैं आपके महाराव की कद्र करता हूँ। वह मेरे दोस्त बन सकें तो मैं अपनी खुशकिस्मती समझूँगा, और अगर न बनें तो रणथंभौर गढ़ का वही हाल होगा जो छाछगढ़ का हुआ है।

सुरजन—यह तो हम जानते हैं। इसलिए आपसे कुछ निवेदन करने आया हूँ। महाराव तो चौहानी के नशे में हमारे देश को उजाड़ने पर तुले हैं।

अलाउद्दीन—आप लोग कोशिश करें तो यह बरबादी रुक सकती है।

सुरजन—हजारों स्त्री बच्चे बे-घरबार हो कर सड़कों पर मारे-मारे फिर रहे हैं, मुझसे तो यह नहीं देखा जाता। मेरे लिए राव से बढ़ कर रैयत है। इसीलिए मैं आपके पास आया हूँ।

अलाउद्दीन—आप जैसे नेक-तबीयत, रहम-दिल राजा हों तो

क्या बात है! अलाउद्दीन सब कुछ कर सकता है सुरजनसिंह जी! आप हमारा साथ दें तो मैं आपके मुल्क को फिर हरा भरा कर सकता हूँ।

सुरजन—लोग मेरे नाम पर थूकेंगे। मैं तो आपसे केवल यह निवेदन करने आया था कि यह युद्ध आप समाप्त कर दीजिए। अभी कई वर्ष तक रणथंभौर गढ़ में अपनी रक्षा करने की शक्ति है, इसलिए व्यर्थ ही इतना रक्त-पात क्यों करते हैं? मेरे निवेदन पर ध्यान देने के बजाय आप इतना बड़ा लोभ मेरे सामने रख रहे हैं। महाराव के साथ छल! ओह, दुनिया मुझे पिशाच कहेगी।

अलाउद्दीन—पिशाच कहेगी! वाह ठाकुर साहब, आप भी कितने भोले हैं? जिसके पास शक्ति है उसे कोई कुछ नहीं कह सकता। आज आप मेरे मेहमान हैं। भीतर चलिए। रात भर सोचिए। सुबह अपना फैसला बताइए।

(दोनों का प्रस्थान)

[पट-परिवर्तन।]

चौथा दृश्य

[स्थान—रणथंभौर गढ़ की राज-वाटिका। एक फव्वारे के पास स्फटिक आसन पर महाराव हम्मीरसिंह बैठे हैं।]

हम्मीर—संपूर्ण जीवन विस्तृत रेगिस्तान बन गया है। विश्राम के लिए एक क्षण भी उपलब्ध नहीं है। आज किले की यह दीवार टूट गई है। आज शत्रु ने उस तरफ आक्रमण किया है, वहाँ अपनी शर-संचालन मे निपुण सेना पहुँचाओ। सोते-जागते केवल

युद्ध के ही स्वप्न। कितना सुन्दर है यह जीवन! संघर्ष का ही नाम तो जीवन है। संसार की आँखों में ऐसा जीवन एक यंत्रणा है, किन्तु मुझे तो इस यंत्रणा में भी अनिर्वचनीय सुख मिलता है। हरे-हरे शस्य-श्यामल प्रदेशों में आनन्द अनुभव करने वाले तो सभी हैं, लेकिन रेगिस्तान की तपन में तृप्ति पाने वाले राजस्थानी ही हैं।

(मीर महिमा का प्रवेश)

मीर—कहिये महाराव, बगीचे की बहार लूट रहे हैं?

हम्मीर—बहार! हाँ भाई! ज़िन्दगी की बहार लूट रहा हूँ। इन फूलों को देखो, जिनका सिर्फ एक दिन का जीवन है, किस अभिमान के साथ मुसकरा रहे हैं! भाई मरना तो है ही, क्यों न जब तक जिया जाय हँस-हँस कर जिया जाय।

मीर—मैंने आपकी ज़िन्दगी के बगीचे में वसंत की बहार की जगह पतझड़ की पत्तों तक को गिरा देने वाली हवा चला दी है।

हम्मीर—ऐसा क्यों कहते हो महिमा! मुझे अपने आदर्श की रक्षा के लिए कष्ट सहने में कितना आनन्द मिलता है, इसे क्या आप नहीं जान पाते? मैं तो जो कुछ कर रहा हूँ वह परोपकार के लिए नहीं, आत्म-सुख के लिए कर रहा हूँ।

मीर—आपने मेरी खातिर अपने बूढ़े चाचा साहब को भी कुरबान कर दिया, दोस्ती का ऐसा नमूना क्या दुनिया की तवारीख में और कहीं मिलता है?

हम्मीर—मनुष्यता को इतना कंगाल न समझो मीर साहब! राजा-महाराजाओं का इतिहास तो लोग लिख लेते हैं, किन्तु क्या साधारण लोगों में मनुष्यता के उच्च उदाहरण नहीं मिलते? जो

लोग हमारे इशारे पर प्राण समर्पित करते हैं या जो दीपक की भाँति मुसीबतों की आँच में कण-कण जल रहे हैं, उनमें कितने ही ऐसे हैं जिनके सामने महाराव हम्मीर अत्यंत क्षुद्र हैं।

मीर महिमा—यह मैं मानता हूँ इंसानियत गरीबों में भी पाई जाती है और हैवानियत तो खास तौर से अमीरों की दौलत है। लालच इंसान को हैवान बनाता है।

(सुरजनसिंह का प्रवेश)

हम्मीर—आओ भाई सुरजनसिंह !

सुरजन—एक अत्यंत गंभीर परिस्थिति पर विचार करना है महाराव !

हम्मीर—अत्यन्त गंभीर ! आपकी समस्याओं को मैं जानता हूँ। जिस दिन से मीर साहब आये हैं उसी दिन से आपकी समस्याएँ गंभीर हो गई हैं। लेकिन आज मैं किसी गंभीर समस्या पर विचार करने को तैयार नहीं हूँ। देखते नहीं हो, अभी सूर्य निकला ही है और आप गंभीर समस्या ले कर आ गये। ये फूल आपकी हँसी उड़ा रहे हैं। परिन्दे फुदक-फुदक कर आते हैं, व्यंग-भरी दृष्टि से देख कर उड़ जाते हैं। इस वक्त तुम गंभीर समस्या ले कर आये हो !

सुरजन—आज तो महाराव कवि हुए जा रहे हैं। जीवन के सत्य को पर्दे के पीछे छिपाये रखने से उसकी गम्भीरता में कमी तो आ नहीं सकती। उपेक्षा उसे गम्भीर से भयंकर बना देती है।

हम्मीर—देखो सुरजन ! रणथंभौर का महाराव आँखें रखता है। उसे चढ़ता हुआ भी सूर्य नज़र आता है और उतरता हुआ भी। युद्ध के मैदान में भी उसके हृदय में आनन्द की वीणा बजती है।

आनंदोत्सव में भी उसके प्राणों में युद्ध का भैरव राग बजता है। वह वसंत में छिपे हुए पतझड़ के विनाश-बीजों को देखता है और पतझड़ की शुष्कता में वसंत के विकास को भी। क्या गम्भीर मुँह बना कर बैठने से ही यह जाना जा सकता है कि समस्या गम्भीर है?

सुरजन—फिर भी महाराव, आप तो केवल युद्ध-क्षेत्र के सैनिकों की संख्या याद रखते हैं। उन सोने-चाँदी के टुकड़ों की तरफ़ तो मुझे ही देखना पड़ता है जिनके ज़ोर पर ये सैनिक समर-क्षेत्र में खड़े होते हैं। पेट की ज्वाला जीवन के दिन छीन लेती है। युद्ध ने रण-थंभोरगढ़ के खज़ाने की कितनी सीढ़ियाँ खाली कर दी हैं यह भी आपको पता है?

हम्मीर—रणथंभोर का खज़ाना एक-एक सीढ़ी नीचे उतर रहा होगा, मेरी ज़िन्दगी के दिन भी दिन में कई महीने पार कर जाते हैं। मैं अन्दाज़ा तो लगा पाता हूँ सुरजन!

सुरजन—लेकिन स्थिति अंदाज़े से कहीं ज़्यादा खराब है। हम दस दिन भी युद्ध नहीं कर सकते।

हम्मीर—सच!

सुरजन—हाथ कंगन को आरसी क्या? महाराव स्वयं चल कर देख सकते हैं!

मीर महिमा—महाराव, बहुत हो चुका! जिस शख्स ने मेरी खातिर अपनी सारी रियासत बरबाद करा दी, अपने चाचा को मौत के मुँह में झोंक दिया और जो अपनी भी जान पर खेल रहा है, मेरा भी उसके लिए कुछ फ़र्ज़ है। मैं कल ही अलाउद्दीन के पास जाऊँगा। मेरे उसके पास चले जाने से यह जंग रुक जायगा, मेरा एक दोस्त

बरबादी से बच जायगा। आपका अहसान मैं ज़िन्दगी भर न भूलूँगा महाराव ! आपने मुझे सगे भाई से बढ़ कर माना है।

हम्मीर—क्षत्रिय शरणागत को देवता मानता है। आपको मौत के पंजे में जाने दूँगा तो मेरे महादेव मुझसे ही नहीं, मेरे वंश से भी रूठ जावेंगे। मैं अपने ऊपर महादेव का अभिशाप नहीं लेना चाहता। हम्मीर जब तक जीवित है, मीर महिमा की ज़िन्दगी पर आँच नहीं आ सकती।

सुरजन—लेकिन आप युद्ध कब तक जारी रख सकेंगे ?

हम्मीर—अब बहुत जल्दी युद्ध का निपटारा होगा।

सुरजन—क्या संधि कर लेंगे ?

हम्मीर—संधि ! संधि की बात सोचना भी पाप है। समझौता क्षत्रिय के जीवन के पास नहीं फटक सकता। मित्र या शत्रु, जीवन या मरण, इस पार या उस पार ! बीच का रास्ता हम लोग नहीं पकड़ते। निपटारा संधि के द्वारा नहीं, युद्ध के द्वारा ही होगा।

सुरजन—किन्तु युद्ध संचालन के लिए······

हम्मीर—धन चाहिए। अब हमें धन की आवश्यकता नहीं रही। मेरे सैनिक मेरे इशारे पर प्रत्येक परिस्थिति में कार्य करेंगे, प्राणों पर खेलेंगे। युद्ध होगा, डट कर युद्ध होगा।

सुरजन—सत्य भावुकता से बहुत दूर रहता है।

हम्मीर—हम्मीर का सत्य संसार से पृथक् है सुरजन ! दस दिन के योग्य तो रसद हमारे पास है न ?

सुरजन—जी, इतनी तो हो जायगी।

हम्मीर—अब रक्षणात्मक युद्ध न हो सकेगा। गढ़ में घिरे रहने

से हम अपने देश से कट गये हैं। हमें गढ़ से बाहर भी युद्ध करना पड़ना पड़ेगा।

मीर महिमा—यह तो मैं भी महसूस कर रहा था कि जब से चाचा साहब शहीद हुए हमारी ताकत आधी हो गई। बाहर भी हमारी फौज लड़ती, दुश्मन की रसद लूटती, उसका लड़ाई का सामान छीनती, और हमले भी करती तो क्या मज़ाल थी कि इतने दिन ये लोग यहाँ ठहर पाते। मेरे दिल में न जाने कितने दिन से यह ख्वाहिश है कि मुझे एक हजार सिपाही मिल जावें तो मैं बाहर रह कर दुश्मन से लड़ूँ। बोलिए महाराव, चाचा साहब की जगह मुझे मिल सकेगी?

हम्मीर—एक वादा करो तो; कि आप अलाउद्दीन को आत्म-समर्पण नहीं करोगे। मेरा इससे बड़ा अपमान नहीं हो सकता कि शत्रु आपको प्राप्त कर ले। चौहानों की नाक न कटवाना मीर साहब!

मीर महिमा—जिस तरह मेरी इज्ज़त को आप अपनी इज्ज़त समझते हैं, उसी तरह मैं भी आपकी इज्ज़त को अपनी समझता हूँ। मेरे भी हाथ देखिए महाराव. पठान राजपूतों से कम बहादुर नहीं हैं, और वे बेईमान भी नहीं होते।

(नेपथ्य में तुरही बजती है)

हम्मीर—चलो, तुरही बज रही है।

(सब का प्रस्थान)

[पट-परिवर्तन]

पाँचवाँ दृश्य

[स्थान—रणथंभौर गढ़ के निकट ग्राम की एक गली। कुछ ग्रामीण स्त्री, पुरुष, बच्चे और बच्चियाँ अपने सिर पर गठरियाँ लादे, हाथ में लाठी लिये जा रहे हैं।]

एक बालिका—(गाती है)

चल अभागे छोड़ कर घर।
झोंपड़ी की बात क्या है,
धूल होते हैं महल भी।
दिल गरीबों के भला क्या,
हिल उठे थर-थर अचल भी।
चल, अपरिचित राह पर चल,
मोह परिचित का भुला कर।
चल अभागे छोड़ कर घर।
स्नेह से पाला जिन्होंने,
स्नेह से जिनको सम्हाला,
स्नेह का दीपक जिन्होंने—
था हृदय के बीच बाला।
खा गया उनको अँधेरा;
झर रहे हैं अश्रु झर-झर।
चल अभागे छोड़ कर घर।
थे खिले जिस वाटिका में
फूल, उसमें रह न पाये।

आ गई आँधी अचानक,
फूल-पत्ते सब उड़ाये।
देख कर बरबाद क्यारी,
हँस रहा है आज अम्बर।
चल अभागे छोड़ कर घर।

(बालिका का गाना रुकता है। नेपथ्य से घोड़ों की टापों की आवाज़ आती है।)

एक ग्रामीण—सुनते हो, यह तो सेना के आने का कोलाहल है।

दूसरा ग्रामीण—हाँ भाई, शायद इस बार इस गाँव की बारी है।

तीसरा ग्रामीण—सिर पर पैर रख कर भागो! जान प्यारी है तो सिर की गठरी फेंको और नौ दो ग्यारह हो जाओ।

पहला ग्रामीण—लेकिन, ये बच्चे! इन्हें छोड़ कर कहाँ जायँ? ये तो जल्दी भाग नहीं सकते। और ये स्त्रियाँ, इनकी इज़्ज़त……

दूसरा ग्रामीण—हाँ, इनकी इज़्ज़त……

एक स्त्री—क्या भैया, सिपाही इतने निष्ठुर हैं कि अबोध बालकों की भी हत्या कर देते हैं? वे स्त्रियों की इज़्ज़त का भी ख्याल नहीं करते?

(एक घायल सैनिक को उठाये हुए दो व्यक्तियों का प्रवेश। घायल का एक हाथ और एक पैर कटा हुआ है। चेहरे पर बड़ा सा घाव है। घावों से खून बह रहा है। चेहरा विकृत हो गया है। घायल को एक तरफ से लाया जाता है, दूसरी तरफ से ले जाया जाता है।)

एक ग्रामीण—पास में ही कहीं युद्ध हो रहा है।

एक स्त्री—घायल सिपाही को देख कर मेरी तो रूह काँप उठी है। आदमी हिंसक पशुओं से भी अधिक दुष्ट और निष्ठुर है। मनुष्य

को मनुष्य इस तरह मारता है।

दूसरा ग्रामीण—तुम हो ब्राह्मण की बेटी; इसलिए घायल को देख कर काँप उठीं। अरे अभी जा कर युद्ध-भूमि को देखो तो तुम्हारे प्राण ही निकल जायँ। लाशों का ढेर लगा होता है; जिनपर गिद्ध बैठे दावत उड़ाते हैं। कहीं सिर पड़ा होता है, कहीं धड़ होता है। किसी का गला तलवार से आधा कटा होता है, किसी के पेट की आँतें निकली होती हैं, किसी का सिर बीच से चिरा होता है। युद्ध ऐसी ही भयङ्कर वस्तु है बहन!

स्त्री—मनुष्य राक्षस हो गया है।

दूसरा ग्रामीण—हाँ बहन, राक्षस हो गया है। मनुष्य के स्वार्थ ने दूसरों पर प्रभुत्व जमाने की इच्छा पैदा की। जैसे बैलों को हम जुए में कसते हैं, उसी तरह बहुत से मनुष्य गरीब लोगों को दास बना कर उनसे तरह तरह के काम लेते हैं। स्वयं मौज उड़ाते हैं और उनसे काम कराते हैं। हम अपने बैलों को पेट भर घास दाना तो देते हैं, अपनी छान मे उन्हें बाँधते तो हैं, लेकिन मनुष्य तो अपने दास को न पेट भर खाना देता है, न रहने को घर। जिन्हें हम राजा रईस सेठ साहूकार कहते हैं, उनका यही चित्र है बहन!

तीसरा—राजा-रईसों के चित्र तो पीछे खींचना, पहले यह सोचो किधर भागोगे।

पहला ग्रामीण—किस तरफ जाने से फौज का सामना न होगा?

(चपला का संन्यासिनी के वेश में प्रवेश। उसके पीछे और भी स्त्रियाँ हैं जो हाथों में तलवारें लिये हुए हैं।)

चपला—सिर पर गठरी लादे कहाँ जा रहे हो?

एक ग्रामीण—जहाँ सींग समावें।

चपला—या जहाँ मौत न आवे। ऐसा कौन सा स्थान है जहाँ यमराज नहीं पहुँच सकते?

दूसरा ग्रामीण—जब तक संभव हो यमराज को धोखा देने का प्रयत्न तो करना चाहिये।

चपला—धिक्कार है तुम्हें! अपनी मातृभूमि पर शत्रु को तांडव करने को छोड़ कर तुम भागे जाते हो! अपनी मातृभूमि को छोड़ते हुए क्या तुम्हें दुःख नहीं होता? जिसके प्राणों का रस पी कर और जिसका अन्न खा कर तुम इतने बड़े हुए, पुष्ट बने, विपत्ति के समय तुम उसे छोड़ जाओगे?. जहाँ जाओगे वहाँ तुम्हें जन्मभूमि की याद नहीं आवेगी? क्या तुम्हारी आत्मा तुम्हें धिक्कारेगी नहीं?

स्त्री—बहन, कौन अपनी जन्म-भूमि को छोड़ते समय व्याकुल नहीं होता? हमें हमारा घर-बार, पशु-पक्षी, वृक्ष, खेत, कुएँ, नदी और सरोवर पुकार रहे हैं। ऐसा जान पड़ता है मानो सब हमारे भाई-बन्धु हैं। बहन, जी करता है, भागने के बजाय यहीं जान दे दूँ।

चपला—शाबाश बहन, प्रेम ही निर्जीवों में जान डाल देता है। तुम पुरुषों को जन्मभूमि के लिए जान देने को उत्तेजित करो।

पहला ग्रामीण—जो क्षत्रिय हैं, वे लड़ रहे हैं। हमारा कार्य तो लड़ना नहीं है। हम सदा से खेती करते आये हैं, लेकिन युद्ध के काल में खेती हो नहीं सकती, इसलिए हमें भी जन्मभूमि को छोड़ना पड़ेगा। पेट की ज्वाला को किसी तरह परिश्रम करके शांत करना होगा।

चपला—देश क्या केवल क्षत्रियों का है? जन्मभूमि पर प्राण

देने का अधिकार प्रत्येक देशवासी को है। भाई! देश की शत्रु से रक्षा करने के लिए प्रत्येक जाति के पुरुषों को आगे बढ़ना होगा। जो अपने जीवन का मोह न करे वही तो क्षत्रिय है। केवल क्षत्रिय के घर जन्म लेने ही से कोई क्षत्रिय नहीं हो जाता। ऐसे भी क्षत्रिय हैं भाई, जो स्वार्थ के कारण शत्रु से मिल गये हैं। उन्हें क्या हम क्षत्रिय कह सकते हैं? क्षत्रिय तो क्या, हम उन्हें मनुष्य भी नहीं कह सकते। जो मृत्यु से डर कर जन्मभूमि को शत्रु के पैरों तले रौंदी जाने को छोड़ देते हैं, क्या वे जीवित हैं? वे तो चलती-फिरती लाशें हैं। तुम क्या ऐसी ही लाशें बनना चाहते हो?

एक ग्रामीण—हम प्रस्तुत हैं देवि! लेकिन ये स्त्रियाँ और ये बच्चे?

चपला—इन्हें मुझे सौंप दो। मैं इनकी व्यवस्था करूँगी। आप लोग तलवारें लें। (साथ की महिलाओं से) दो इन्हें तलवारें।

(ग्रामीण तलवारें पकड़ते हैं)

चपला—गाओ बहनो, देश-गीत!

(सब गाते हैं)

कर रही आह्वान जननी
रक्त-रंजित ओढ़ साड़ी।

जिन सपूतों को पिलाया
दूध छाती से लगा कर,
जिन सपूतों को खिलाया
गोद में अपनी उठा कर,
जिन सपूतों को सुलाया
लोरियाँ सस्नेह गा कर,

वे दिखावें हाथ अपने
युद्ध में जा कर खिलाड़ी।
कर रही आह्वान जननी
रक्त-रंजित ओढ़ साड़ी।
देश के आकाश में हैं
मेघ काले आज छाये;
झड़ लगी है संकटों की,
वज्र टूटे, गढ़ गिराये;
दुःख के दिन में जननि को
छोड़ कर जो मूढ़ जाये,
वह चिता अपनी सजाता
हाथ से अपने अनाड़ी।
कर रही आह्वान जननी
रक्त-रंजित ओढ़ साड़ी।
है अमर आत्मा हमारी,
क्यों हृदय भयभीत होवे?
वह अमर पद पा सकेगा
युद्ध में जो शीश खोवे।
जान पायें शक्ति अपनी,
क्यों न अपनी जीत होवे?
हम बढ़े जावें निरन्तर
पार करते कष्ट-खाड़ी।

कर रही आह्वान जननी
रक्त-रंजित ओढ़ साड़ी…

(गाते-गाते सब का प्रस्थान)

[पट-परिवर्तन ।]

छठा दृश्य

[स्थान—रणथंभौर का राजमहल । महाराव हम्मीरसिंह वीर वेश में खड़े हैं ।]

हम्मीर—चौहानों की तलवार का तेज क्षीण नहीं हुआ; लेकिन खजाना खाली हो गया है, रसद समाप्त हो गई है। वीरत्व का नहीं, साधनों का अभाव भारत के प्रसिद्धतम क्षत्रिय-कुल की आहुति ले कर मानेगा। लेकिन समाप्त होने के पहले अग्नि-पुत्र अपने तेज की चकाचौंध से दिशाएँ प्रकाशित कर देंगे।

(मीर महिमा का सैनिक वेश में प्रवेश)

मीर महिमा—महाराव, आज मैं आपसे आखिरी विदा लेने आया हूँ। इतने दिन आपने मुझे अपनी मुहब्बत और मेहरबानी के साये में रखा है। उसकी याद मेरी रूह में समा गई है। इंसान कौन है, यह तो मैं आपको देख कर ही जान पाया हूँ। आज आपने मुझे अपनी फौज का सिपहसालार बना कर मुझ पर कितना यक़ीन किया है। आज मैं अपनी ज़िन्दगी का सब से बड़ा काम करने जा रहा हूँ। आज की लड़ाई मेरी किस्मत का फैसला कर देगी।

हम्मीर—साथ ही रणथंभौर की किस्मत का भी। इतने दिन राजपूतों के साथ रह कर आपने राजपूतों के स्वभाव को जान लिया

है। आप दिल्ली की फौज की युद्ध-प्रणाली भी जानते हैं। आपसे अच्छा सेनापति रणथंभौर को नहीं मिल सकता। चाचा साहब जो कार्य न कर सके वह आप कर दिखाएँगे। आपको अवश्य विजय प्राप्त होगी।

[महारानी देवल और राजकुमारी चंद्रकला का प्रवेश। चंद्रकला के हाथ में थाली है, जिसमें टीका करने का सामान है।]

महारानी—मेरा भी आशीर्वाद है कि मेरा भाई आज अपना नाम अमर कर दे। अपने साथ रणथंभौर की सेना का भी नाम गौरव के उच्च शिखर पर पहुँचा दे।

(जय और विजय का वीर-वेश में प्रवेश। वे आ कर महारानी और महाराव के पैर छूते हैं।)

महारानी—यशस्वी हो बेटा!

हम्मीर—चौहानों के रक्त का गौरव बढ़ाओ कुमार! मीर महिमा, आज दोनों कुमार आपकी अधीनता में संग्राम करेंगे।

मीर महिमा—लेकिन इन जिगर के टुकड़ों को उस खतरनाक लड़ाई में भेजने की क्या ज़रूरत है?

हम्मीर—अब आवश्यकता आ पड़ी है कि हम अपनी मूल्यवान से मूल्यवान वस्तु का भी मोह न करें। जन्मभूमि आत्म-त्याग और बलिदान माँगती है।

महारानी—अतिथि हमारा देवता है। अतिथि के लिए हम अपनी प्यारी से प्यारी वस्तु देने में संकोच नहीं करतीं।

मीर महिमा—(गद्गद हो कर) बहन, आप जिस ऊँचाई से बोल रही हैं वहाँ तक क्या दुनिया वाले पहुँच सकते हैं? अपने जिगर

के टुकड़ों, अपनी आँखों के तारों, अपने मुल्क की उम्मीदों को इस नाचीज़ के लिए खतरे में न डालिए। मैं हाथ जोड़ कर आपसे भीख माँगता हूँ। मेरा भी दिल है महारानी। मैं माँ की मुहब्बत को जानता हूँ। आप अत्याचार कर रही हैं, अपने ऊपर, मेरे ऊपर और रणथंभौर के ऊपर।

महारानी—देखो महिमाशाह, यह ठीक है कि मैं माँ हूँ, यह भी ठीक है कि युद्ध-भूमि में जीवन और मरण के किनारे मिल जाते हैं। फिर भी शायद आप क्षत्राणी के हृदय को नहीं समझ सके। जिस दिन क्षत्राणी का पुत्र युद्धभूमि को प्रस्थान करता है, उसका मातृत्व उसी दिन धन्य होता है।

जय—मीर साहब, आप हमारी चिन्ता न करें। जब जन्मभूमि के मान का प्रश्न उपस्थित है, उस समय प्रत्येक युवक का कर्तव्य है कि वह अपना बलिदान चढ़ाने को प्रस्तुत हो जाय।

विजय—माँ के मन्दिर में राजपुत्र और साधारण सैनिक के मस्तकों का मूल्य बराबर है मामा साहब! जब आप सहस्रों सैनिकों के शीशों के लिए चिन्तित नहीं हैं तो इन दो खोपड़ियों का इतना मोह क्यों है? और हम निरे बच्चे नहीं हैं। हम अपनी कीमत स्वयं समझते हैं। मातृभूमि के रज-कण महाराव के पुत्रों से अधिक मूल्यवान हैं मामा साहब!

हम्मीर—आज मेरे आनन्द की सीमा नहीं है। आज मेरे प्राणों के अंश अपना शौर्य दिखाने जा रहे हैं। आज सम्राट् पृथ्वीराज भी स्वर्ग से अपने वंशजों का तेज देख कर फूले न समायेंगे। मेरे पुत्रो, मुझे पूरा विश्वास है कि तुम अपने तेज की चकाचौंध से शत्रु की

आँखों को चौंधिया दोगे। रक्त की गंगा में स्नान कर के आज अग्नि-पुत्रों की आत्मा तृप्त होगी।

जय—पिताजी, आपने हमारे लिए देश की मान-रक्षा में भाग लेने का जो सौभाग्य उपस्थित किया, हमें अपना पौरुष दिखाने की जो आज्ञा दी, उसके लिए हम कृतज्ञ हैं। आपके यश की आज भारत के कोने-कोने में चर्चा है। हमारे हाथों में भी आपकी ही स्फूर्ति है। हमारी आँखों में आपकी ही बिजली है। हमारे प्राणों में आपका ही जोश है। हमें विश्वास है कि हम परीक्षा में उत्तीर्ण होंगे।

राजकुमारी—हाँ भैया, तुम्हारा नाम ही जय-विजय है। पराजय तुम्हारे पास नहीं आ सकती। तुम ध्वजा फहराते हुए जाओ और ध्वजा फहराते हुए लौटो। राजकुमारों को लड़ते हुए देख कर हमारी सेना में जोश का समुद्र उमड़ पड़ेगा। मेरी भी इच्छा होती है कि मुझे भी युद्ध-भूमि में जाने का अवसर मिले।

विजय—जिस दिन हमारा खून पानी हो जायगा, बहन, उस दिन तुम्हें शस्त्र पकड़ने की आवश्यकता पड़ेगी।

राजकुमारी—किन्तु हमें शस्त्र-संचालन सिखाया क्यों जाता है!

हम्मीर—आत्म-रक्षा के लिए। बेटी, क्षत्रिय मान को प्राणों से प्रिय मानता है। देश का मान हमें जितना प्रिय है, उतना ही नारी जाति का भी। जब तक एक भी क्षत्रिय जीवित है, उसकी आँखों के सामने किसी नारी का अपमान नहीं हो सकता। लेकिन कभी ऐसे क्षण भी आ सकते हैं कि नारी को आत्म-निर्भर होना पड़ता है। उस क्षण के लिए ही तुम्हें शस्त्र-संचालन की शिक्षा दी जाती है बेटी!

महारानी—हाँ बेटी, आज तक किसी नारी के कारण क्षत्रिय को

आँखें नीची करने का अवसर नहीं मिला। जब शस्त्र बेकार हो जाते हैं, ज्वाला हमें चिर पवित्र कर देती है। लपटों की साड़ी पहन कर हम अमरत्व के लोक को प्रस्थान कर देती हैं।

राजकुमारी—आओ, रणयात्रा के पहले बहन को टीका कर के आशीर्वाद दे लेने दो।

(दोनों राजकुमार आगे बढ़ते हैं। राजकुमारी टीका करती है।)

राजकुमारी—भैया, संसार के आकाश में तुम्हारे तेज का सूर्य युग-युग तक चमके।

जय-विजय—तुम्हारा आशीर्वाद सत्य हो।

महारानी—आइए मीर साहब, आपको भी टीका लगा कर रण-यात्रा को भेजूँ।

(मीर महिमा आगे बढ़ता है।)

महारानी—(टीका लगाती हुई) मेरे भाई, तुमपर मनुष्यता को युग-युग तक अभिमान रहे।

मीर महिमा—(महारानी के चरणों पर गिर कर) मेरे दिल की यही ख्वाहिश है कि जिस मुल्क में ऐसी हस्तियाँ पैदा होती हैं, उसकी खाक में मैं भी मिल जाऊँ। यही तमन्ना ले कर मैं आज जा रहा हूँ।

[पटाक्षेप]

तीसरा अंक

पहला दृश्य

[रणथंभौरगढ़ के मुख्य द्वार पर मीर महिमा, जय, विजय तथा उनके पीछे अन्य राजपूत सैनिक रणसज्जा से सज्जित खड़े हैं।]

जय—मामाजी, दस मास के बाद आज रणथंभौर गढ़ का फाटक खुला है। शत्रु को प्रवेश करने की चुनौती देते हुए हम यहाँ खड़े हैं।

विजय—किसकी शक्ति है कि वह हमारी तलवार के वार से बच कर गढ़ के भीतर घुस सके ?

मीर महिमा—वास्तव में अब असली लड़ाई शुरू हुई है। हमारे सामने जीने मरने का सवाल है। राजकुमार, आज आपको कुछ नहीं करना पड़ेगा, आप सिर्फ देखते रहें। मैं इस फाटक पर पहाड़ की तरह डटा हूँ। आप मेरे पीछे रह कर फौज को हिम्मत देते रहें।

जय—हम तीनों ही द्वार पर दृढ़ मीनारों की भाँति खड़े हैं। हमारी मोर्चाबन्दी इतनी दृढ़ है कि शत्रु की सेना फाटक खुला पा कर भी भीतर प्रवेश नहीं कर सकती। जिस तरह पतंगे दीपशिखा पर टूट कर जान गँवाते हैं, वे भी बार-बार फाटक की तरफ बढ़ कर मौत के मुँह में सो जाएँगे।

(नेपथ्य में तुरही की आवाज़)

मीर महिमा—महाराव का युद्ध का नक्शा ला-जवाब होता है, इसमें शक नहीं। हम तो सिर्फ लड़ना जानते हैं। लड़ाई का नक्शा बनाना तो महाराव का ही काम है। जितना मज़बूत जिस्म उन्हें

मिला है उससे कहीं तेज़ दिमाग भी। जिस अलाउद्दीन की फौज की आँधी के सामने बड़े-बड़े राजा-महाराजा तिनकों की तरह उड़ गये, उसका दस महीने तक मुक़ाबला करना क्या आसान काम है?

(नेपथ्य में तुरही की आवाज स्पष्ट होती है)

मीर महिमा—लो, दुश्मन की फौज फाटक को खुला देख कर अंदर घुसने के लालच को न रोक सकी। वह बढ़ी चली आ रही है।

विजय—हमें बाण-वर्षा प्रारंभ करनी चाहिए।

जय—किले से होने वाली बाण-वर्षा शत्रुओं को आगे न बढ़ने देगी।

मीर महिमा—लेकिन उन्हें और आगे बढ़ने दो, ताकि हम उनपर आसानी से निशाना साध सकें। देखो राजकुमार, वह मेरा भाई सबसे आगे हाथी की तरह झूमता चला आ रहा है। एक माँ की गोद में पले हुए दो भाई लड़ाई के मैदान में आज आमने-सामने खड़े हैं। किस्मत के करिश्मे हैं ये! मैं चाहता हूँ लड़ने के पहले एक बार भाई से गले मिल लूँ। मैं पहले ही सोच कर आया था कि आज भाई से मुलाक़ात होगी। उसके लिए एक ख़त भी लिख लाया था। तीर में बाँध कर अभी उसके पास पहुँचाता हूँ!

(तीर में बाँध कर चलाता है)

जय—क्या ख़ूब! गज़ब का निशाना है! तीर ठीक मीर गभरू साहब के पैरों में जा कर गिरा है।

मीर महिमा—वह देखो, भाई ने अपनी फौज को रोक दिया है। वह अकेला आगे आ रहा है।

विजय—उन्हें शक नहीं हुआ कि हम धोखा देंगे।

मीर महिमा—वह जानता है कि महिमा जिस तरफ खड़ा होगा ईमानदारी से खड़ा होगा। छिप कर बेईमानी से वार नहीं करेगा। फिर भाई का यकीन तो उसे करना ही चाहिए।

(मीर गभरू का प्रवेश। मीर महिमा दौड़ कर गभरू से गले मिलता है।)

जय—कैसा स्वर्गीय है यह दृश्य! प्रेम की दो धाराएँ एक हो जाती हैं। दोनों की आँखों से अश्रु प्रवाहित हैं। इन आँसुओं से वसुधा पवित्र हो गई। रणथंभौर की चिर अतृप्त भूमि आज इस खारे पानी से तृप्त हो गई।

मीर गभरू—भाई!

मीर महिमा—भाई!

(आँसू पोंछ कर अलग होते हैं)

विजय—अश्रुओं ने वाणी पर पूर्ण विराम लगा दिया है।

मीर गभरू—आज हमारे माँ-बाप अपने बेटों को ईमान के लिए एक दूसरे की जान का गाहक देख कर भी खुश हो रहे होंगे।

मीर महिमा—भाई, मुझे माफ करो।

मीर गभरू—मुझे भी माफ करो भाई! मुझे इस बात की खुशी है कि तुम अपने ईमान के सच्चे हो।

मीर महिमा—कौम का दुश्मन······

मीर गभरू—कौमियत से इंसानियत के टुकड़े न करो। इंसान की ख्वाहिशें ही इन दीवारों की आड़ लेती हैं। एक दिन मैं भी कौमपरस्ती का मतलब उलटा समझता था। भाई, ईमान का साथ देना ही कौमपरस्ती है।

जय—तो क्यों नहीं आप हमारा साथ देते ?

मीर गभरू—इसीलिए कि मेरा ईमान कहता है, जिसका नमक खाया है उसके लिए जान कुरबान कर दो। हम दोनों भाई मैदान में एक दूसरे के सर पर तलवारें ताने खड़े हैं, लेकिन हमारे दिलों में वही मुहब्बत का दरिया लहरा रहा है जो हमारी माँ ने अपने दूध के साथ हमारे भीतर भर दिया है।

मीर महिमा—आज मुहब्बत और ईमान की होड़ है भाई।

मीर गभरू—मुहब्बत और ईमान में दुश्मनी नहीं है भाई! आज लड़ाई में तुम मेरी गरदन उड़ा दोगे तब भी मैं यह नहीं कहूँगा कि तुम्हारे दिल में भाई की मुहब्बत न थी। इस हाड़-मांस के पुतले के मिट जाने से क्या है महिमा! मुहब्बत इस जिस्म में नहीं है, वह दिल में है। एक घड़ी के लिए भी मैं यह नहीं सोच सका कि मेरा भाई मेरा दुश्मन है। और सच पूछो तो मैंने महाराव हम्मीर को भी अपना दुश्मन नहीं समझा। मैंने ईमानदारी से अपना फर्ज अदा किया है। लड़ाई के मैदान के बाहर हम गले मिलेंगे और मैदान में हमारी तलवारें मिलेंगी।

मीर महिमा—भाई, यह हमारी आखिरी मुलाकात है। आज हमारा-तुम्हारा मुकाबला है। आज इस लड़ाई का फैसला हो जायगा। आज मैं अपने सर पर कफन बाँध कर निकला हूँ भाई! लेकिन तुम्हें सामने पा कर मेरा दिल न जाने क्यों हिम्मत छोड़ रहा है।

मीर गभरू—भाई, तुम्हें महाराव की मुहब्बत की कीमत देनी ही होगी। जिस इंसान ने अपने बुजुर्ग चाचा, अपने बीसियों रिश्तेदारों, सैकड़ों साथियों और हजारों चुने हुए बहादुरों को तुम्हारी खातिर कटा

दिया, उसकी मुहब्बत के आगे मेरी मुहब्बत क्या चीज़ है महिमा!

मीर महिमा—मैं क्या बताऊँ भाई! मैंने तो महाराव जैसा इंसानियत का नमूना कहीं नहीं देखा। आज दोनों कुमारों को मेरे मातहत लड़ने भेजा है। उन्हें अपने जिगर के टुकड़ों को मौत के मुँह में डालते हुए ज़रा भी हिचकिचाहट नहीं हुई। और महारानी; उनकी बात क्या कहूँ भाई! उन्होंने मुझे अपना सगा भाई माना है। जब दूसरे सरदार कहते हैं, महाराव एक आदमी की खातिर सारा मुल्क बरबाद न कराइए, अपने खानदान को न मिटाइए, उस वक्त महारानी कड़क कर कहती हैं, 'पृथ्वीराज के वंशज राजपूती आन नहीं छोड़ सकते। जब तक एक भी चौहान बच्चा जिन्दा है हमारे मेहमान का बाल भी बाँका नहीं हो सकता।' महारानी ने अपने बेटों का हाथ मुझे पकड़ा कर कहा, 'इनकी जिन्दगी तुम्हारे काम आवे तो मैं अपने को निहाल समझूँगी। सबसे छोटा कुमार अभी बालक है, नहीं तो उसे भी कुरबान करने में मुझे झिझक नहीं।'

मीर गभरू—वाह राजपूत औरत! दुनियाँ के पर्दे पर ऐसी मिसाल कहाँ मिलेगी! मैं बदकिस्मत हूँ महिमा? जो ऐसी देवी के कदमों में अपना सिर नहीं झुका सका हूँ। इस लड़ाई का चाहे कुछ नतीजा निकले, लेकिन जब तक सूरज-चाँद रहेंगे, महाराव और महारानी के नाम रोशन रहेंगे। महिमा! मुहब्बत इससे ज्यादा वक्त नहीं चुरा सकती! अब हम तलवारें मिलावें।

[तलवार निकालता है। महिमा भी तलवार निकालता है।
दोनों तलवार से तलवार मिलाते और मुसकराते हैं।]

मीर महिमा—विदा भाई!

(मीर गभरू का प्रस्थान)

मीर महिमा—हमें ज़रा और आगे बढ़ना चाहिए !

(सबका प्रस्थान)

[पट-परिवर्तन]

दूसरा दृश्य

[स्थान—महाराव हम्मीर का अंतःपुर । समय—संध्या ।

हम्मीरसिंह अकेले चिन्ताग्रस्त घूम रहे हैं]

हम्मीर—सब गये । एक-एक कर के सब गये । किन्तु मेरा क्षत्रियत्व का अभिमान अब भी शेष है । राजपूती की आन पर हँसते-खेलते मेरा परिवार चढ़ गया । एक फलता-फूलता राज्य सर्वनाश की ज्वाला में जल गया । तो क्या मैं हार मान लूँ ? संधि कर लूँ ? असंभव ! मैं चौहान-कुल को कलंकित न होने दूँगा । अभी मुझे अपने बाहु-बल पर विश्वास है । अभी मुझमें शत्रु से लोहा लेने का हौसला बाकी है । त्रिलोचन का तीसरा नेत्र मेरी तलवार में समा गया है । हम्मीर की तलवार शत्रु-सेना को खेत की तरह काटेगी ।

(सुरजनसिंह का प्रवेश)

सुरजन—(अभिवादन करके) महाराव, सर्वनाश हो गया !

हम्मीर—जानता हूँ सुरजन ! दोनों कुमार वीर-गति पा गये । उन्होंने चौहान-वंश की आन रख ली सुरजन ! वे महाकाल की भाँति संहार करते हुए महाशून्य की गोद में सो गये ।

(महारानी का प्रवेश)

महारानी—क्या कुमार वीर-गति पा गये ?

सुरजन—हाँ महारानी जी ! मेरा तो हृदय टूक-टूक हुआ जा

रहा है। मुझे डर लगता है, आपकी आँखों में आँसू नहीं है।

महारानी—अग्नि-पुत्रियाँ आँसू नहीं बहातीं। मुझ जैसी सौभाग्य-शालिनी नारी कौन होगी? मेरे पुत्रों ने देश की मान-रक्षा के लिए, राजपूती आन के लिए, अपने प्राणों की बलि चढ़ा दी है।

सुरजन—आपको दुःख नहीं होता महारानी! आपका दिल···

महारानी—पत्थर का है। लेकिन इस पत्थर के अन्तस्तल में भी पानी है। प्राणों में आज भयङ्कर तूफान उठ रहा है। ज्वालामुखी जल रहा है।

(राजकुमारी का वीर वेश में नंगी तलवार लिये प्रवेश)

राजकुमारी—माँ, मैं युद्ध करने जाऊँगी। भाई के हत्यारों को काल के गाल में पहुँचाऊँगी।

महारानी—मैं तो समझी कि मेरा एक कुमार लौट आया है। वाह वेटी! तू इस वेश में कैसी शोभा देती है! (हृदय से लगाती हैं)

सुरजन—महाराव, क्या अब भी संधि का समय नहीं आया?

हम्मीर—संधि का समय! इतने सर्वनाश के पश्चात् भी केवल अपमान को गले लगाऊँ सुरजनसिंह! चाचाजी की, दोनों कुमारों की और हमारे हज़ारों सैनिकों की आहुति देने के वाद, अब मैं आत्मरक्षा का प्रयत्न करूँ! धिक्कार है इस भावना को!

(चपला का संन्यासिनी के वेश में प्रवेश)

राजकुमारी—आ गई हो बहन! ठीक समय पर आईं। हम वीरांगनाएँ अब शस्त्र पकड़ेंगी।

चपला—वाह राजकुमारी, तुम तो आज साक्षात् कार्तिकेय जान पड़ती हो। लेकिन बहन, ये आँखें पुकार-पुकार कर कह रही हैं, वहाँ

विनाश नहीं निर्माण निवास करता है।

हम्मीर—चपला, मैंने सारे देश का विनाश करा दिया।

चपला—कहाँ महाराव! देश में तो कोई ऐसा व्यक्ति नहीं जो महाराव पर यह आरोप लगाता हो। जले हुए ग्रामों के खँडहर, दिवंगत सैनिकों के स्त्री-बच्चे और रणथंभौर की खून से रँगी भूमि, सब पुकार-पुकार कर कह रहे हैं—महाराव! आपने देश में प्राण डाल दिये हैं। यह साँसों की धड़कन ही तो जीवन नहीं है, क्षत्रियत्व का तेज ही क्षत्रियों का जीवन है। आत्म-सम्मान के लिए प्राण देना ही मानव का जीवन है।

हम्मीर—महिमाशाह का समाचार नहीं मिला सुरजन!

चपला—उनका समाचार मैं जानती हूँ महाराव! वे भी लड़ते-लड़ते शहीद हो गये।

महारानी—सच, वह सच्चा मुसलमान ईमान पर कुरबान हो गया!

चपला—अकेला ही नहीं। राजकुमारों की मृत्यु के बाद मीर पागल हो गये। अंधा-धुन्ध तलवार चलाते हुए वे दुश्मन की फौज में घुस गये। उनका भाई मीर गभरू सामने आया। दोनों मस्त हाथियों की तरह उलझ गये। लड़ते-लड़ते दोनों भाई एक दूसरे पर लुढ़क गये और पास ही दोनों भाई चिर-निद्रा में सो गये।

हम्मीर—ये दोनों पठान मनुष्यता को अमर कर गये। जो अपने मित्र के लिए अपने भाई की गरदन पर तलवार चला सकता था, वह क्या साधारण मनुष्य था? सुरजन, महाराव ने मनुष्य को पहचानने में धोखा नहीं खाया।

सुरजन—लेकिन अब तो युद्ध जारी रखने का कोई कारण नहीं

रहा। मीर महिमा के लिए यह विध्वंस-चक्र चला था, अब इसे समाप्त हो जाना चाहिए। हमारे देश ने, हमारे राजा ने और राजपूत भाइयों ने अपनी शक्ति का परिचय दे दिया है। मैं आपके हित-चिंतन को ही......

हम्मीर—हित-चिंतन! सुरजन, अब हित-चिंतन कैसा? जो मेरे प्राणों का सहारा था, वही चला गया। तुम समझते हो मीर महिमा के शहीद हो जाने से हमारा कर्तव्य समाप्त हो गया। हम्मीर ऐसा नहीं सोच सकता। रणथंभौर यदि शरणागत की रक्षा करने में समर्थ न हो सका तो उसके लिए बलि होने का साहस तो कर ही सकता है। संधि पर इस युद्ध की समाप्ति नहीं है। (महारानी से) महारानी!

महारानी—प्राणेश्वर!

हम्मीर—अब तुम्हारे तेज को प्रकट करने का समय आ गया है।

महारानी—मैं समझती हूँ प्रियतम! जौहर की ज्वाला हमारी प्रतीक्षा कर रही है। चौहान-कुल का गौरव अक्षुण्ण रहेगा महाराव! जौहर की लपटों से चौहानों के प्राणों में प्रलयकारी ज्वाला प्रज्वलित होगी।

हम्मीर—तो कल हम वीर-व्रत लेंगे। कल अंतिम युद्ध होगा। केसरिया वस्त्र पहन कर हम बाहर निकलेंगे। तुम चिता तैयार कर रखना। यदि हम विजय पा कर लौट आये तो जौहर की आवश्यकता न होगी, अन्यथा महाप्रकाश में मिल जाना।

महारानी—आपकी आज्ञा का पालन होगा।

हम्मीर—चपला, तुम प्राणों को प्रज्वलित करने वाला गीत सुनाओ। अन्तिम गान सुन कर हम यहाँ से विदा लें।

चपला—गीत मैं सुनाऊँगी; लेकिन एक बात पूछूँ महाराव, जौहर और वीर-व्रत क्या इस युद्ध को समाप्त कर देंगे? जौहर की ज्वाला में जो देवियाँ भस्म हो जाएँगी, वीर-व्रत पालन करते हुए जो अवशेष राजपुत्र समाप्त हो जाएँगे, उनकी स्मृति क्या भविष्य में युद्ध की ज्वाला न भड़का देगी? उस युद्ध का नेतृत्व करने के लिए देश को कोई आश्रय चाहिए। राजा चाहिए।

हम्मीर—मुझे माँगती हो?

चपला—इतना बड़ा अधिकार मुझे नहीं है। मैं कुमार अक्षयसिंह की भीख माँगती हूँ। अभी वे बालक हैं। चौहान-कुल के एकमात्र दीपक हैं। उन्हें मैं अपने अंचल में छिपा कर ले जाऊगी।

हम्मीर—देश स्वयं राजा का चुनाव कर लेगा।

चपला—लेकिन बालक की बलि चढ़ाना निर्दयता है। बुलाइए कुमार को। राजकुमारी, कहाँ है तुम्हारा भाई?

राजकुमारी—मैं बुलाती हूँ। (प्रस्थान)

महारानी—हाँ, अब अपना गीत सुनाओ।

चपला—इस शोक के समय?

हम्मीर—अब हम सुख-दुःख के पार पहुँच चुके हैं। तुम गाओ चपला!

चपला—(गाती है)

जाग पड़े जौहर की ज्वाला!
अपनी तलवारें चमकाने,
बलि के पथ पर होड़ लगाने,
जाते हैं माँ के दीवाने,

मर कर पीने जीवन-प्याला ।
जाग पड़े जौहर की ज्वाला !
जब तक जीना आन न खोना,
रजपूती की शान न खोना,
जन्म-भूमि का मान न खोना,
करना कभी न यश-पट काला ।
जाग पड़े जौहर की ज्वाला !
पहन-पहन केसरिया वाना,
गाते हुए युद्ध का गाना,
आज वीर व्रत सब ने ठाना,
तुम भी पहनो लाल दुशाला ।
जाग पड़े जौहर की ज्वाला !

(राजकुमारी का अक्षयसिंह के साथ प्रवेश)

महारानी—बेटा, आज से यह तुम्हारी माँ हैं । तुम्हें अभी जाना होगा ।

अक्षय—कहाँ ?

चपला—संसार के युद्ध-क्षेत्र में । कितना उत्तरदायित्वपूर्ण कार्य आज मैं अपने ऊपर ले रही हूँ ! प्रभो, मुझे इस मधुर भार को वहन करने की शक्ति दो ।

(चपला और कुमार का प्रस्थान)

हम्मीर—अब हम लोग कल के व्रत का प्रबन्ध करें ।

(सब का प्रस्थान)

[पट-परिवर्तन]

तीसरा दृश्य

[अलाउद्दीन अपने डेरे में मसनद से टिका बैठा है। जमालखाँ तथा अन्य सैनिक अधिकारी बैठे हैं।]

अलाउद्दीन—मीर गभरू के मारे जाने का मुझे बहुत अफसोस है। यह लड़ाई हमें बहुत महँगी पड़ी। मुझे तो इस बात में शक है कि हम एक साल और लगे रहें तब भी हम्मीर पर काबू पा सकेंगे। हमारी आधी से ज़्यादा फौज ज़ाया हो चुकी है। दिल्ली से यहाँ तक फौज लाने में और रसद का इन्तज़ाम करने में हमारा खज़ाना भी खाली हो चला है।

जमाल—मीर महिमा के लिए आप आये थे, सो वह तो अपने भाई की तलवार का शिकार हो चुका है। अब हम बिना अपनी इज़्ज़त पर धब्बा लगाये वापस दिल्ली लौट सकते हैं।

अलाउद्दीन—लेकिन इससे तो मेरा बनाया हुआ सारा नक्शा बदल जायगा। रणथंभौर तो वह जगह है जहाँ बैठ कर मैं सारे राजपूताने को जीतना चाहता हूँ।

जमाल—लेकिन रणथंभौर को जीतना आसान नहीं है यह आज तक का तजरबा हमें बता चुका है। क्या हम अपनी ताकत ज़ाया नहीं कर रहे? इन्हीं दिनों अगर अफगानिस्तान के रास्ते से कोई हमला कर दे, तो जब तक फौज यहाँ से वहाँ तक जाय, वह दिल्ली का तख्त······

अलाउद्दीन—पलट सकता है। इसमें कुछ शक नहीं कि उस तरफ से हमला होने का हमेशा डर बना रहता है। ऐसी हालत में

बहुत दिनों तक कहीं अपनी ताकत को अटकाये रखने से नुकसान होने का डर है। शायद हमें रणथंभौर का घेरा उठाना ही पड़े।

(एक सैनिक का प्रवेश)

सैनिक—(कोर्निश कर के) एक राजपूत सरदार बादशाह सलामत से मुलाकात की अर्ज़ कर रहा है।

अलाउद्दीन—यहीं भेज दो।

(सैनिक का अभिवादन कर के प्रस्थान)

अलाउद्दीन—अब आप लोग आराम करें।

(सब का प्रस्थान)

अलाउद्दीन—इसमें शक नहीं कि हम्मीर के भी चुने-चुने सरदार मारे गये। राजकुमार शहीद हो गये। लेकिन फिर भी वह किले के भीतर बैठा है। उसे इतनी अच्छी तरह से सामना करते देख कर दूसरे राजाओं को भी हिम्मत होगी कि दिल्ली की बादशाहत के खिलाफ सर उठावें। ऐसी हालत में सुलह कर के वापस लौट जाने में ही होशियारी है।

(सुरजनसिंह का प्रवेश और अभिवादन करना)

अलाउद्दीन—ओहो, आप हैं ठाकुर सुरजनसिंह! मैं दिल में आप ही को याद कर रहा था। कहिए गढ़ के क्या हाल हैं! अभी तक आपने वादा पूरा नहीं किया। क्या अब भी महाराव सुलह करने को तैयार नहीं?

सुरजन—संधि शब्द का उच्चारण महाराव पाप समझते हैं। लेकिन मैंने ऐसा चक्र चलाया है कि बादशाह को बिना अधिक प्रतीक्षा किये, बिना अधिक श्रम किये और बिना अधिक व्यय किये

गढ़ हस्तगत हो जावे।

अलाउद्दीन—सच! अच्छा यह तो बताओ आज गढ़ पर ये दीये क्यों जलाये गये हैं?

सुरजन—आज वहाँ उत्सव मनाया जा रहा है।

अलाउद्दीन—दोनों कुमारों की आज ही मौत हुई है और गढ़ में उत्सव मनाया जा रहा है! आप यह क्या कहते हैं?

सुरजन—कुमारों के वीर-गति पाने से महाराव को शोक नहीं हुआ।

अलाउद्दीन—हमारी फौज के सिपहसालार गभरू के मारे जाने से खुश हो रहे हैं?

सुरजन—नहीं, वे अपनी संपूर्ण अवशेष शक्ति से अंतिम युद्ध करना चाहते हैं। मौत का आलिंगन करने के पहले जीवन का आनन्द ले रहे हैं। गढ़ के बचने की अब उन्हें कोई आशा नहीं रही। और मैंने महाराव को यह बात जँचा दी है कि रणथंभौर का धन-कोष समाप्त हो गया है। ऐसी स्थिति में अब वे प्राणों की आहुति देने को प्रस्तुत हैं।

अलाउद्दीन—सच! तब तो मेरे पौ बारह हैं। मेरी क़िस्मत जाग पड़ी है। भाई, मैं तो आज वापस जाने की बात सोच रहा था। आपने मेरे मुर्दा जिस्म में जान फूँक दी। आज हम भी जलसा मनाएँगे। सुरजनसिंह! आज मैं आपको रणथंभौर का राव बनाऊँगा। आपको गाना सुनने का शौक है न राव! मैं अपनी बाँदी को भेज़ता हूँ। आज रात आप यहीं आराम करें।

(अलाउद्दीन का प्रस्थान)

सुरजन—मैं रणथंभौर का महाराव बनूँगा। मेरा दिल आज काँप रहा है। मैं क्या करने जा रहा हूँ! महाराव बनने के लिए अपने देश को शत्रु के हाथ में सौंपने का षड्यन्त्र कर रहा हूँ। महाराव की लाल-लाल आँखें सामने चमकती हुई नज़र आती हैं। जिस जन्म-भूमि की मान-रक्षा के लिए महाराव ने चाचाजी की और दोनों कुमारों की बलि चढ़ा दी, स्वयं भी राज-बलि चढ़ाने को प्रस्तुत हैं, और महारानी क्षत्राणियों के साथ जौहर की ज्वाला को पवित्र करने वाली हैं, उसपर विदेशी की छत्र-छाया में मैं राज्य करूँगा!

(बिजली की तरह तीव्रगति से चपला का छुरी लिये हुए प्रवेश)

चपला—राज्य करोगे? सुरजन! (सुरजनसिंह की छाती में छुरी भोंक देती है।) पिशाच! जन्मभूमि के विरुद्ध षडयन्त्र करने की यही सज़ा है।

सुरजन—(लेट जाता है) आह! कौन? चपला! चपला, तुमने मुझे बचा लिया। मैं क्षत्रियत्व पर कलंक लगाने चला था। तुमने मेरे पामर प्राणों को बेशर्मी का जीवन बिताने से बचा लिया। अब मैं कुछ घड़ी का मेहमान हूँ, तुम तुरन्त यहाँ से भाग जाओ।

चपला—हाँ, जाने का प्रयत्न करूँगी। राजकुमार अक्षय का भार मुझपर है। रात के अंधकार में आपको चोर की तरह इधर आते देख कर मुझे संदेह हुआ था, इसलिए मैं चली आई। रणथंभौर की चिन्ता तो समय स्वयं कर लेगा, मुझे तो केवल क्षत्रियत्व की चिन्ता थी। मुझे खुशी है कि मुझे सफलता मिली। अब मैं जाती हूँ। (प्रस्थान)

सुरजन—पानी ! ओह, यहाँ एक घूँट पानी देने वाला भी नहीं है ! देश-द्रोही को ऐसी ही मौत मिलती है ।

(हाथ में शराब का प्याला लिये नर्तकी का तान छेड़ते हुए प्रवेश)

नर्तकी— मैं भर कर लाई प्याला,
तू बन पी कर मतवाला ।

(नर्तकी की सुरजन पर निगाह पड़ती है । वह चौंक पड़ती है । हाथ से प्याला छूट जाता है और वह 'खून ! खून !!' चिल्लाती हुई भाग जाती है ।)

(अलाउद्दीन का प्रवेश)

अलाउद्दीन—क्या है ! (सुरजनसिंह को देखकर) यह क्या ! खून !! चौकीदार ! चौकीदार !!

(एक चौकीदार का प्रवेश और अभिवादन करना)

अलाउद्दीन—ले जाओ इसे । कुत्तों के आगे डाल दो ।

(चौकीदार सुरजनसिंह को घसीट ले जाता है ।)

अलाउद्दीन—कैसी हैरानी की बात है ! मेरे डेरे में खून ! मेरी नाक के नीचे ! (प्रस्थान)

[पट-परिवर्तन]

चौथा दृश्य

[रणथंभौर गढ़ की दीवार पर महारानी देवल और राजकुमारी चन्द्रकला शृङ्गार किये हुए प्रवेश करती हैं।]

राजकुमारी—माँ, संध्या हो चली। युद्ध का कोई समाचार नहीं मिला। मैं समाचार लेने जाऊं?

महारानी—हम थोड़ी देर और प्रतीक्षा करेंगी बेटी। हमारी विजय असंभव तो नहीं है, लेकिन उसकी आशा बहुत कम है। हमारी विजय तो हमारे आत्म-बलिदान में ही है।

राजकुमारी—माँ, जौहर में जलने के बजाय युद्ध-भूमि में क्यों न चलें? क्या हम कुछ भी नहीं कर सकतीं?

महारानी—बेटी, हमारी शक्ति सैनिकों को जन्म देने में, उन्हें शक्तिशाली बनाने में है। सारे संसार को हम प्रकाश देती हैं। हम आत्मदान और आत्म-बलिदान के द्वारा अत्याचार से युद्ध करती हैं। हम दूसरों को मार कर अपने देश को स्वतन्त्र नहीं करतीं। हम तो स्वयं अपनी बलि दे कर देश के प्राणों में नवजीवन फूँकती हैं।

(सुन्दर वस्त्राभूषणों से सज कर अनेक क्षत्राणियों का प्रवेश)

महारानी—हमारा युद्ध करने का यही तरीका है। हमें अपने देश, धर्म और जाति से कितना प्रेम है, केवल यही प्रमाणित करना हमारे लिए पर्याप्त है। बलिदान स्वयं अपना कार्य करता है। हिंसा का परिणाम अस्थायी है, किन्तु आत्म-बलि का परिणाम अजर-अमर है। आज क्षत्राणियों में जो तेज बाकी है, यह उनकी माँ-बहनों के आश्चर्यजनक आत्म-त्याग के कारण ही है। जौहर की जो लपटें

आकाश को छूने बढ़ती हैं, वे अदृश्य रूप से युग-युग तक जलती रहती हैं।

एक क्षत्राणी—महारानी जी ? वह देखिए, वे किसके निशान हैं ? निशानों के पीछे किसकी सेना है ?

महारानी—ये निशान तो शत्रु के हैं। ज्ञात होता है, सभी अग्नि-पुत्र रणभूमि में सो गये। उन्होंने अपना वीर-व्रत पालन कर लिया इसके पहले कि शत्रु-सेना यहाँ तक आ पाये, हमें जौहर की ज्वाला प्रज्वलित करके उसकी गोद में जा बैठना चाहिए।

एक क्षत्राणी—हम प्रस्तुत हैं।

महारानी—जिसे संसार का अब भी कुछ मोह बाकी हो, जो मृत्यु से डरती हो, जो आग की लपटों को सहने में समर्थ न हो, वह अब भी अपने जीवन की रक्षा का प्रयत्न कर सकती है। मैं उसके लिए गढ़ से बाहर पहुँचाने का प्रबन्ध करा दूँगी।

दूसरी क्षत्राणी—अग्नि के अंश को अग्नि में प्रवेश करते समय कष्ट कैसा ? लज्जा-जनक जीवन व्यतीत करने से अधिक कष्टकी स्थिति क्या हो सकती है ? तिसपर महारानी जी, हम लोगों के पिता पुत्र भाई तो एक-एक कर के देश के लिए बलि हो चुके। अब हमा लिए आकर्षण ही क्या है ? रात दिन वियोग की ज्वाला मे जलने तो जौहर की ज्वाला कहीं अधिक शीतल है !

महारानी—इस जौहर को अन्तिम आश्रय के रूप में नहीं, बल्कि जीवन-धर्म के रूप में अपनाना चाहिए। जब तक हमारे हृदय मे ज्वाला को आलिंगन करने की प्रेरणा अंतरात्मा से नहीं उठेगी, तब तक हमारा बलिदान व्यर्थ होगा।

पहली क्षत्राणी—ठीक है महारानी जी! जौहर तो हमारा जीवन-धर्म है। इस चिता में आग तो पीछे लगती है, हम ममत्व को उसके पहले ही जला चुकती हैं। हमारे जौहर की लपटें हमें उसी क्षण से भस्म करने लगती हैं, जब हम अपने हाथ से अपने पति पुत्र और भाइयों को केसरिया वाना पहना कर रणभूमि की ओर भेज देती हैं। जौहर की लपटें तो हमारे जले हुए शरीर पर मरहम की तरह लगती हैं। मुसकराते हुए हम अमरत्व की गोद में खेलने लगती हैं।

महारानी—जाओ बेटी, फूल-मालाएँ लाओ।

(राजकुमारी का प्रस्थान)

महारानी—वीर-भूमि! आज तुझे हमारा अंतिम प्रणाम है। सुदृढ़ रणथंभौर की चट्टानों से दिल्ली की सेना दस मास से निरंतर टकराती रही है। शत्रु के सर्वनाशी शस्त्र हार गये, उसके सैनिक पराजित हो गये। मुट्ठी भर राजपूतों ने प्राणों पर खेल कर आज तक गढ़ की रक्षा की और रक्षा करते हुए प्राणों की बलि चढ़ा दी। राजपूतों के पौरुष ने नहीं, द्रव्य ने धोखा दिया। साधन समाप्त हो गये, लेकिन हृदय पराजित नहीं हुआ। सम्राट् पृथ्वीराज आज भी स्वर्ग में बैठे अपने वंशजों के आत्म-बलिदान और शौर्य से प्रफुल्लित हो रहे होंगे।

(राजकुमारी फूल-मालाएँ ले कर आती है। महारानी राजकुमारी से एक-एक माला ले कर क्षत्राणियों को पहनाती हैं।)

महारानी—वीर माताओ, वीर बहनो, वीर पुत्रियो! आज हम सब एक साथ चिता पर चढ़ कर एक रूप हो जाएँगी। हममें न कोई बड़ा है न कोई छोटा। संसार को दिखा दो कि वास्तविक जीवन क्या

है। जब तक जीना, गौरव के साथ जीना, स्वाधीनता को स्थिर रख कर जीना। जिस दिन पराधीनता अपने पैर बढ़ाये, उस दिन या तो उसे भस्मसात् कर दें या स्वयं भस्म हो जायँ ?

(चपला का राजकुमार अक्षयसिंह के साथ प्रवेश)

चपला—महारानी ! अपने पुत्र को आशीर्वाद दो !

(राजकुमार माँ के चरण छूता है)

महारानी—बेटा अक्षय ! जौहर की लपटें धू-धू स्वर में तुम्हें आशीर्वाद देंगी। आज से जन्मभूमि की गोद ही तुम्हारी माँ होगी, कष्ट-सहन ही तुम्हारा भोजन। जिस आन पर तुम्हारे पिताजी ने सर्वस्व चढ़ा दिया, उसी पर तुम भी दृढ़ रहना। याद रखना क्षत्रिय सिर कटा देते हैं, झुकाते नहीं।

अक्षय—माँ, तुम मुझे छोड़ जाओगी ?

महारानी—नहीं बेटा ! मेरा शरीर जल कर भस्म हो जायगा, किन्तु मेरी आत्मा सदा तुम्हारे चारों तरफ मँडराती रहेगी। तुम्हारे पिताजी की आत्मा भी तुम्हारी आत्मा में निवास करेगी। बेटा, क्षत्रिय मरा नहीं करते। वे चिर अमरत्व में जीवित रहते हैं। जो एक दिन राजमुकुट धारण करता है, दूसरे दिन उसी आनन्द से वह उसे उतार कर फेंक भी सकता है। शिलाओं पर सो कर भी कभी यह न भूलना कि तुम भारत-सम्राट् पृथ्वीराज के वंशज हो, रणथंभौर की कीर्ति अमर कर जाने वाले महाराव के पुत्र हो। संपूर्ण क्षत्रियत्व की तुम पर आशा निर्भर है। झोंपड़ियों में रहते हुए भी यह न भूलना कि तुम्हें राजमहलों ने पाला है। झोंपड़ियों से घृणा न करना, लेकिन अपने गौरव की प्राप्ति की लगन न गँवा देना। हम अपने जौहर

ज्वाला से संपूर्ण देश का हृदय प्रज्वलित कर के जा रही हैं। तुम जिस दिन हाथ में तलवार पकड़ोगे, देश तुम्हारे साथ खड़ा हो जायगा। जाओ बेटा, तुम्हें हम सभी का आशीर्वाद है।

(राजकुमार फिर महारानी के चरण छूता है और बहन से गले मिलता है)

अक्षय—माँ! (कंठावरोध)

महारानी—बेटा, तुम्हारे अवरुद्ध स्वर को सुनती हूँ। तुम्हारे अबोध अंतःकरण का निश्चय जानती हूँ! अक्षय! तुम्हारी कीर्ति अक्षय हो।

अक्षय—मैं कायर की भाँति......

महारानी—नहीं अक्षय! यह कायरता नहीं। ध्वंसावशेष पर तुम्हें नव-निर्माण का कार्य करना है बेटा! साधन-हीन हो कर भी पूर्वजों के स्वत्व को प्राप्त करना है।

चपला—महारानी, फिर आज्ञा......

महारानी—हाँ बेटी, जाओ।

(राजकुमार और चपला का प्रस्थान)

महारानी—जाओ आँखों के तारे! आँखें क्यों बरसना चाहती हैं? आँखों के मेघ, तुम पानी नहीं, बिजली गिराओ। चलो देवियो, अब चिता-सेज पर सोवें।

(सब का प्रस्थान)

[पट-परिवर्तन।]

पाँचवाँ दृश्य

स्थान—रणथंभौर के निकट की तलहटी। महाराव हम्मीर तथा अनेक राजपूत केसरिया बाना पहने, खून से लथपथ, हाथों में खून से रँगी तलवारें लिये प्रवेश करते हैं। महाराव के हाथ में अलाउद्दीन का झंडा है। और सैनिकों के हाथों में भी शत्रु के झंडे हैं।]

हम्मीर—गाओ वीरो, विजय का गीत गाओ।

कुछ सैनिक—(गाते हैं)

गाओ वीर, विजय का गाना।
हम पर कौन विजय है पाता ?
जो आता वह शीश गँवाता।
हम से है यम भी घबराता।
पहने हम केसरिया बाना।
गाओ वीर विजय का गाना।
देखो, यह असि राजस्थानी।
देखो, इसका तीखा पानी।
अमर हो गई आज जवानी।
व्यर्थ न जाता शीश कटाना।
गाओ वीर विजय का गाना॥
ज्यों ही हम ने आँख तरेरी
खेत छोड़ कर भागे वैरी,
उनकी करने चलो अहेरी,

सफल हुआ है जग में आना।
गाओ वीर विजय का गाना॥

हम्मीर—निश्चय ही आज हमारा जन्म लेना सफल हो गया। दस मास की लंबी, कष्टकर और भयंकर लड़ाई के बाद हमारी साध पूरी हुई है।

एक राजपूत—महाराव, आपके सामने कौन टिक सकता है? आपको आशा हो या न हो, हमें आज प्रभात की किरणों में ही विजय का संदेश मिल गया था। आपकी छत्र-छाया में अनेक युद्ध लड़े महाराव, लेकिन ऐसा युद्ध तो अपने जीवन में कभी न देखा न सुना। उस जन-समुद्र में आप तो तीर की तरह घुस पड़े। भला, हम आपको अकेला जाने देते! हमारे प्राणों में बिजली दौड़ गई, हम भी आपके साथ ही घुसे चले गये। जा कर सीधा अलाउद्दीन का हाथी घेर लिया।

हम्मीर—मेरे दिल की दिल में रह गई। महावत उसके हाथी को भगा न ले जाता तो यह संकट सदा के लिए निकल जाता। हमारी विजय स्थायी हो जाती। ये रक्त-बीज के वंशज फिर हमारी नष्टप्राय शक्ति पर आक्रमण करने को आवेंगे।

दूसरा राजपूत—जो होगा देखा जायगा। आज का युद्ध तो उन्हें वर्षों तक याद रहेगा। बादशाह को भागते देख कर उसकी सेना निशान आदि छोड़ कर भाग खड़ी हुई।

तीसरा राजपूत—महाराव, ये निशान अब हमें इनाम में मिल जायेंगे?

हम्मीर—ये निशान ही नहीं, बहुत कुछ। अरे किले के भीतर ये

लपटें कैसी ! ज़रा अपनी तुरही बजाओ ।

(एक सैनिक तुरही बजाता है)

एक राजपूत—आकाश में धुएँ के बादल छा रहे हैं ।

हम्मीर—जान पड़ता है, वीरांगनाओं ने जौहर-व्रत का पालन किया है । हम लोगों की विजय की उन्हें आशा नहीं थी ।

(चपला का प्रवेश)

चपला—कौन ! महाराव !

हम्मीर—तुम यहाँ ?

चपला—मैं छिपे-छिपे कुमार अक्षयसिंह को ले कर जा रही थी कि अपनी तुरही सुन कर मुझे आश्चर्य हुआ । इसलिए इधर आई हूँ । लेकिन महाराव, बड़ा अनर्थ हुआ ।

हम्मीर—वीरांगनाओं ने जौहर व्रत का पालन किया, यही न ! उन्हें हमारे शौर्य पर इतना अविश्वास था ?

चपला—नहीं महाराव ! आपने आगे-आगे शत्रु के निशान कर रखे थे, इसलिए उन्होंने समझा शत्रु की सेना बढ़ी चली आ रही है, सभी राजपूत वीर-गति को प्राप्त हो चुके हैं । उन्होंने जो कुछ किया वह सर्वथा स्वाभाविक था ।

हम्मीर—निश्चय ही इसमें उनकी कोई गलती नहीं है । उन्होंने राजस्थान की कीर्ति को चार चाँद लगा दिये हैं । हम विजय के उत्साह में भूल गये कि लूटे हुए निशानों को आगे रखने से कितना अनर्थ हो सकता है । भगवान् शंकर को जो स्वीकार था, वही हुआ । नियति के वज्र-लेख के आगे मानव का पराक्रम पराजित हुआ । हमारी विजय अब हमारे किस उपयोग की ? अब गढ़ के भीतर जा कर क्या होगा ?

अब संसार में हम लोग बिलकुल अकेले हैं। चलो, वापिस चलो। शत्रु से लोहा लेते हुए सदा के लिए सो जाओ। नियति हमारे विरुद्ध है भाई! और फिर एक न एक दिन तो यह स्थिति आनी ही थी। दो दिन पहले आ गई तो क्या चिंता? चलो फिर हम लोग अपना खेल खेलें।

चपला—महाराव! विवेक!

हम्मीर—विवेक का दीपक बुझ चुका है। महायज्ञ की पूर्णाहुति हो चुकी है। हवन-सामग्री के कुछ कण इधर-उधर क्यों बिखरे रहें? इन्हें भी बटोर कर यज्ञ-कुंड में डालना होगा। हम लोगों ने अपनी आन के लिए सर्वस्व न्योछावर कर दिया। हमें किसी प्रकार की निराशा नहीं। शत्रु को हमारी शक्ति का परिचय मिल चुका है। संसार ने हमारा तेज देख लिया है। संभव है संसार में ऐसे भी लोग हों जो इस संपूर्ण घटना को हम्मीर के हठ का परिणाम कहें। देश-व्यापी हाहाकार में शायद महाराव के प्रति अभिशाप का स्वर निकले……

चपला—यह आप क्या कहते हैं महाराव! न्याय के लिए आपने युद्ध किया, मित्रता के ऊपर सब कुछ न्योछावर कर दिया।

हम्मीर—ऐसे मित्र के लिए जिसने अपने हाथ से अपने भाई का गला काटने में संकोच नहीं किया। केवल जाति के विरुद्ध ही वह खड़ा नहीं हुआ, अपने आत्मीय के सिर पर भी उसने प्रहार किया। मैंने उसकी खातिर यदि अपने आत्मीयों की बलि चढ़ाई तो क्या बुरा किया!

(राजकुमार अक्षय का प्रवेश)

चपला—तुम भी आ गये !

राजकुमार—कब तक खड़ा प्रतीक्षा करता ?

(पिता के चरण छूता है ।)

हम्मीर—अच्छा है बेटा, तुम भी आ गये । अंतिम समय तुम्हें हृदय से लगा लूँ ! (छाती से लगाते हैं) बेटा, तुम्हें बे-माँ-बा का नितांत गरीब बना कर मैं जा रहा हूँ । मुझे क्षमा करना (आँसू) ।

अक्षय—पिताजी, आप रोते हैं ! मुझे दुर्बल समझते हैं माताजी विदा देते समय नहीं रोईं । उन्होंने हँस कर मुझे आशीर्वा दिया था ।

हम्मीर—उनके प्राणों का रुदन उन लपटों की धू-धू आवाज़ प्रतिध्वनित हो रहा है । उनके हृदय का हाहाकार युग-युग तक व्या रहेगा । मैं मनुष्य हूँ, तुम्हारी माँ भी मनुष्य थीं । यह कैसे हो सक है कि वे तुमसे विदा लेते समय रोईं नहीं । मैंने तो इतनी दूर रह क उनकी सूखी आँखों के समुद्र को देखा था । भूलो इन बातों को बेटा, तुम संसार में जीना सीखना । कष्टों की आग में झुलसते हु विधाता को कोसना नहीं । रणथंभौर हमारा है, हमारा हो कर रहेगा मेरी विजय पराजय में परिणत हो गई । तुम पराजय को विजय परिणत करना । लो बेटा, यह मुकुट तुम्हारे सिर पर रखता हूँ अब मैं इस महायज्ञ में अपनी आहुति डालने जाता हूँ ।

(मुकुट अक्षय के सिर पर रखते हैं)

[पटाक्षेप]



